वर्ष - 3, अंक - 4 अप्रेल 2019
जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर, छ.ग.

आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

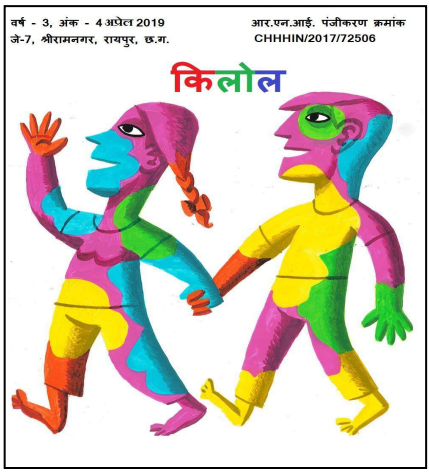

प्यारे बच्चों,

पछले महीने आपने होली मनाई. खूब रंग खेला. किलोल के इस अंक में भी होली के रंग बिखरे हैं. आशा है आपको पसंद आयेंगे.

अब फिर परीक्षा की घड़ी आयी है. आपने पूरे साल मेहनत की है, जिसका फल आपको मिलने वाला है. सब बच्चे परीक्षा की तैयारी अच्छी तरह से करें और बहुत अच्छे नंबर लायें ऐसी हमारी शुभकामना है. इसके बाद तो गरमी की छुट्टियां आने वालीं है. छुट्टियों में फिर से खुब मौज-मजा करेंगे.

आप गर्मी की छुट्टियों में भी अपने मोबाइल पर किलोल का मज़ा नि:शुल्क ले सकते हैं. पत्रिका को डाउनलोड करने का लिंक आपने मोबाइल पर सेव करके रख लें.

किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

<u>उपहार</u>

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

एक गरीब संतराम अपने घर की एक कोने में बैठ कर बिलख -बिलख कर रो रहा था. अट्ठारह साल की अनिता उसकी अकेली संतान थी. उनकी पत्नि मधु भी अपनी पुत्री की चिंता में कमजोर हो गई थी. डाक्टरों की रिपोर्ट के अनुसार अनिता का हृदय खराब हो चुका था. अनिता बस चार दिनो की मेहमान थी. डाक्टरों ने सलाह दी कि यदि कोई अपना हृदय अनिता को दे दे, तो उसकी जान बचायी जा सकती है. शर्त ये थी कि अनिता का खून जिससे मिलता है उसी का हृदय काम आयेगा. अनिता का खून का ग्रुप 'ओ निगेटिव' था, जो बहुत कम मिलता है. केवल एक ही व्यक्ति का खून मिलता था और वह था स्वयं संतराम. डाक्टरों ने उससे कहा यदि तुम अपना हृदय देते हो तो तुम्हारी बेटी की जान बच जायेगी.

यह बात सोचकर संताराम परेशान था. उसी समय उसकी लाडली बेटी अनिता आयी और बोली पिता जी २९ फरवरी को मेरी जन्म दिन है. मुझे उपहार में क्या

देंगे. अचानक संतराम का ह्रदय हिल उठा. हां उपहार! वह अवाक रह गया. अनिता की बात संतराम के कानों में गूंजती रही. सहम कर उसने अपनी बेटी को कहा - ‘‘हां बेटी मै तुम्हें ऐसा उपहार दूंगा जिसको दुनिया के किसी पिता ने अपनी बेटी को नहीं दिया होगा.’’ अनिता खुश होकर चली गई.

२९ फरवरी वह दिन जो चार साल में एक बार आता है. संयोग से अनिता का जन्म दिन उसी दिन था और डाक्टरों ने भी ह्रदय का आपरेशन उसी दिन के लिए तय किया था. नियत तिथि को डाक्टरों ने अनिता का आपरेशन किया. आपरेशन सफल रहा. आपरेशन के बाद अनिता ने आंखें खोली तो उसके सामने डाक्टर एवं उनका पूरा स्टाफ खड़ा था. डाक्टर ने उसे एक पत्र दिया. अनिता पत्र पढ़कर फूट-फूट कर रोने लगी. पत्र में लिखा था - ‘‘बेटी जब तुम यह पत्र पढ़ रही होगी तो मैं तुम्हारे पास नहीं होऊंगा. तुमने मुझसे जन्मदिन का उपहार मांगा था. मैंने कहा था कि दुनिया का सबसे बडा उपहार दूंगा. बेटी मैंने अपना ह्रदय तुम्हे दे दिया है. मेरा ह्रदय तुम्हारे अंदर धड़क रहा है. मेरे पास तुम्हें देने को बस अपना दिल ही था. जिसे मैने तुम्हें दे दिया बेटी. अपनी मां की ख्याल रखना. तुम्हारा भाग्यवान पिता - संतराम.’’ पत्र पढ़कर अनिता अपने ह्रदय को स्पर्श कर चीख पड़ी - ‘‘पिता जी.....’’

संस्मरण - छोटा वाला D

लेखिका - सेवती चक्रधारी

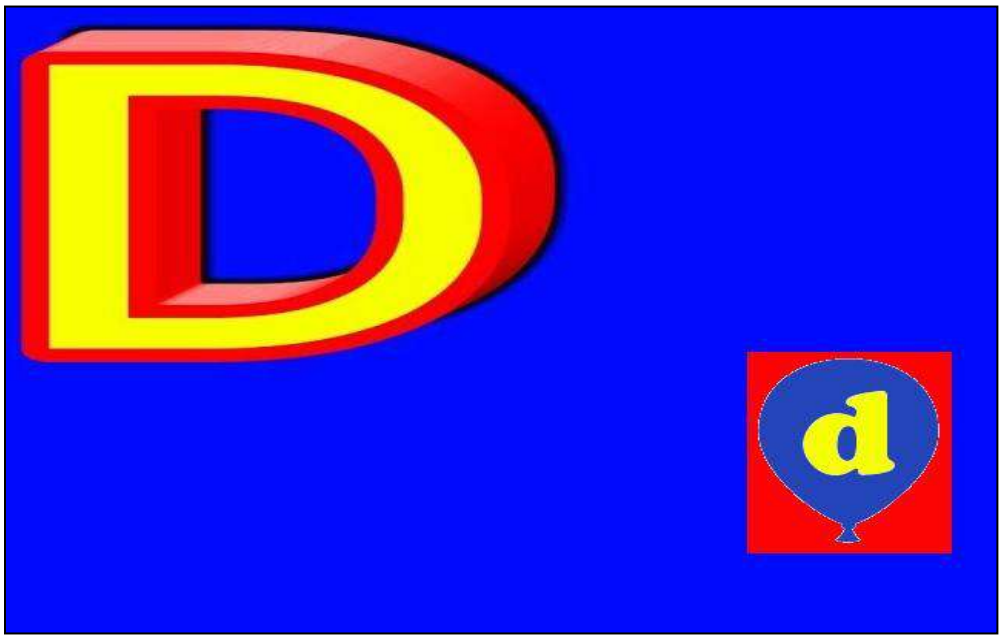

इस बात को शायद एक महीना हो गया है. मै प्रा.शा. गोढी मे कार्यरत हूं. रोज़ की तरह उस दिन भी मै अपने समय पर कक्षा 5वी मे अंग्रेजी पढ़ाने पहुंची. उस समय मै बच्चो को colours name याद करवा रही थी. मैने बच्चो को लिखकर दिखाने को कहा. काफी बच्चो के दिखाने के बाद खिलेश्वर नाम का लड़का आया उसने अपने अंग्रेजी की 4 लाईन वाली कापी मे लिखा था ReD . मै कहा कि" D "को छोटा बना. उसने उस 4 लाईन मे लिखी हुई "D" को मिटाकर तीन लाईन मे लिखा यानि उसकी लम्बाई छोटी कर दी और वापस आया. मैने देखा फिर कहा - बेटा D को छोटा वाला बना. वह वापस गया फिर आया मैने देखा ये क्या? उसने D को दो लाईन मे लिखा था यानि फिर से उसने लम्बाई छोटी कर दी थी. इस बार मैने थोड़ा तेज में कहा - छोटा d बना. वह डर गया और वही खड़े होकर उसने उसे

मिटाकर D को एक लाईन मे लिख दिया. यानि फिर से लम्बाई छोटी कर दी. इस बार मुझे बहुत जोर से हॅसी आ गई. आस-पास खड़े बाकी बच्चे भी हँस पड़े. फिर मैने उसे कापी मे लिखकर (d) बताया, इस बार वह खुद भी हॅस पड़ा. आज भी जब वह बात याद आती है तो मुझे हँसी आ जाती है. तो आप सब ने देखा कि बात स्पष्ट न होने पर क्या हो सकता है. अब इस बात का मै हमेशा ध्यान रखती हूं कि मेरी बात स्पष्ट हो.

चार मितान

लेखक - पुष्पेन्द्र तिवारी

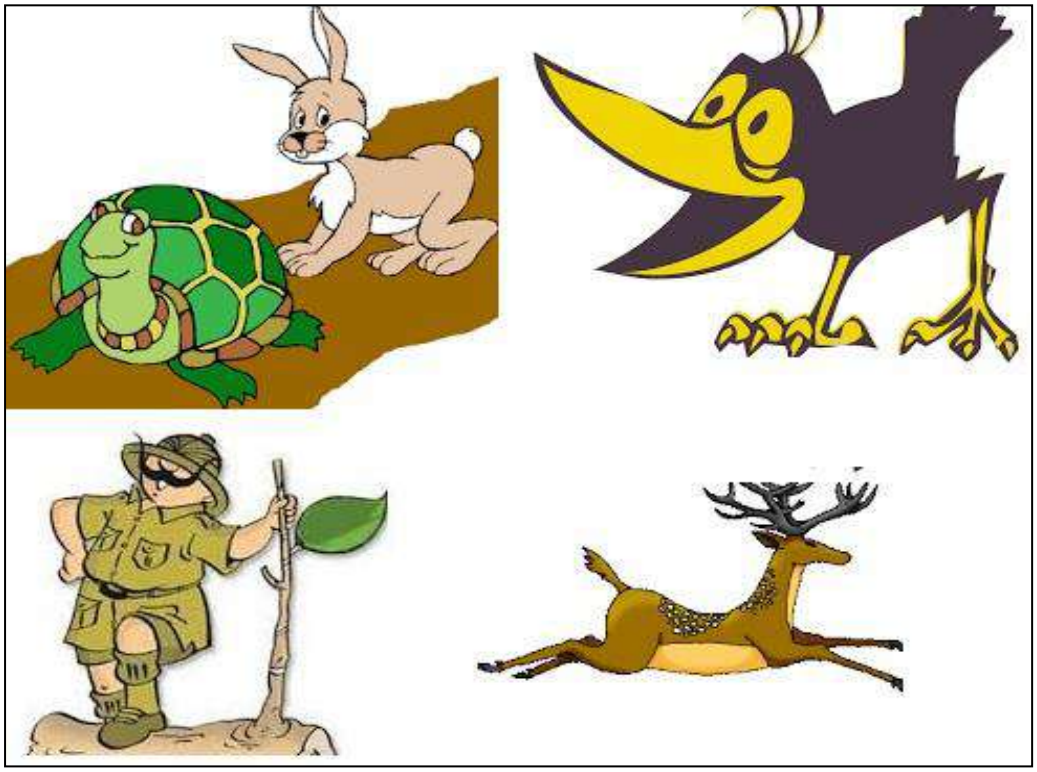

जुन्ना समय के बात आय एक ठन जंगल मा चार झन जानवर रहे खरगोश, केछवा, हिरन अऊ कउंवा,चारो झन जुर मिल के बन मा रहय अऊ खेलय कूदय. एक दिन सब्बो मितान मन बर पेंड तरी बैठे रहय अऊ हिरन के रद्दा देखत देखत बेरा हा पहाय लागिस त खरगोश हा कहिथे कस गा संगवारी हो अतेक बेरा पहागे हमर मितान हिरन हा काबर नई आवत हे तब कौआ हा कहिथे तुमन सब्बो झन एही मेर रुका मै हा उडत उडत जावाथौ और मितान हिरन के पता लगाके झट् ले आवाथौ कउवा हा उडत जाथे और देखथे कि हिरन ला तो शिकारी हा अपन फांदा मा फँदो ले हे अऊ हिरन हा फांदा मा फसे फसे रुवांसी होथे और फेर निकले बर फडफडात रहिथे. झटकुन कौआ हा उडत जाथे और अपन मितान खरगोस,केछवा ला बताइस कि हिरन हा कैसे फांदा मा फस गे हे सब्बो झन जुर मिल के हिरन ला बचाये बर उदिम करे ला धर लेथे कउवा हा कइथे मोर एक ठन संगी मुसवा

जोन हा पहाडी के ओपार रहिथे मै हा जाथव और झटकुन ओला लेके आहू और बताहू त वोह हमार संगी हिरन ला बचाही.

फेर कउवा हा उडत जाथे और मुसुवा ला अपन संग मा ला के हिरन जहा फसे रहिथे उही मेर छोड देथे मुसवा हा अपन दांत ले जाल ल कतर देथे अऊ हिरन हा फांदा ले निकल के दुरिहा जंगल के रद्दा भाग जाथे. मुसवा हा बिला मा घुसर जाथे अउ कौवा हा उड जाथे बपुरा केछवा ला शिकारी हा देख डारथे अउ वोहा शिकारी के हाथ धरा जाथे. सब्बो झन भागत भागत बर पेड़ तरी जाके सुस्ताथे त देखते के केछवा ह तो नइ आए पईस त फेर कउवा ह कइथे सबचला जुरमिल के अपन मितान केछवा ल बचाबो. सब्बो झन जाथे और थोर कन दूर मा हिरन हा शिकारी ल देख के सुत जाथे हिरन ला देख के शिकारी हा सोच म पर जाथे अउ उही मेल केछवा ल जमीन मा धर के हिरन ला पकड़े बर झटकुन भागथे हिरन हा शिकारी ला अपन डहर आवत देख भाग के जंगल अंदर चल देथे अऊ केछवा घलो शिकारी के चंगुल ले छूट के रेंगत रेंगत पाना पताउवा मा लुका जाने. शिकारी कोनो ल नइ पावय और खिसीयात अपन रद्दा चल देथे. फेर चारो मितान मन थोकन देर बाद जंगल मा पेड तरी बैठ के अपन सुख दुःख ला गुठियाथे और अइसने जुर मिल के रहे के बात ला कहिथे.

सीख: - सब्बो झन ल जुर मिल के रहेबर चाही.

सोने का अंडा

लेखक - महेंद्र सिंह साहू, कक्षा-4, प्राथमिक शाला बर्रापारा डौंडीलोहारा

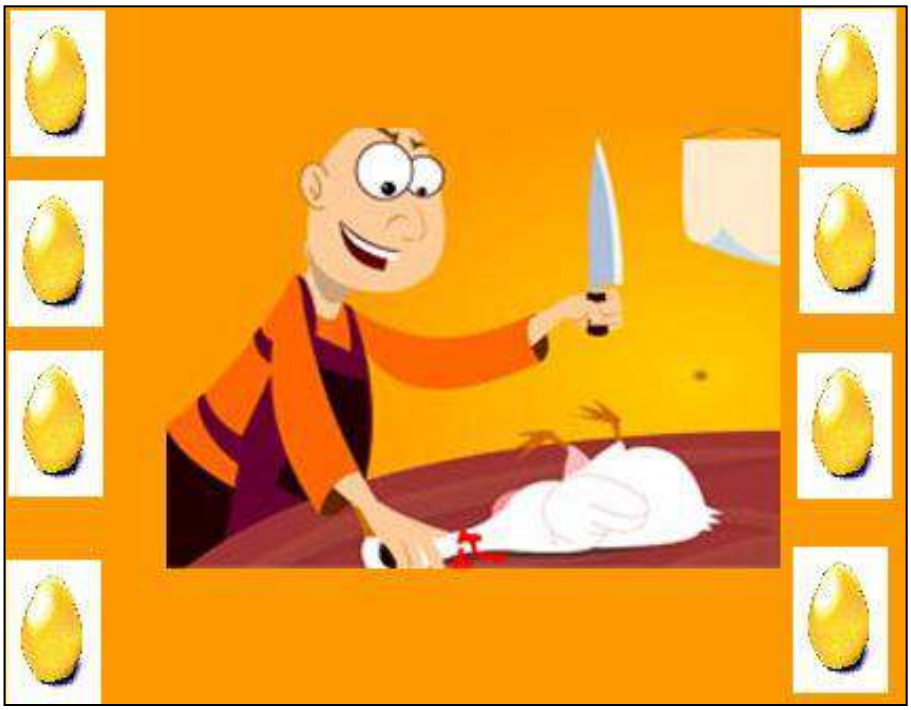

एक गांव में किसान रहता था. उसका नाम रामु था. रामु के पास कुछ मुर्गियां थीं. उनमे से एक मुर्गी कुछ अलग ही दिखती थी. उसका रंग सुनहरा होने के कारण रामु ने उसका नाम सुनहरी रख दिया था. सुनहरी बाकी मुर्गियों की अपेक्षा थोड़ी बड़ी और गोलमटोल थी.

रामु उन्हें दाना पानी देता और आंगन में खुला छोड़ देता और अपने काम पर लग जाता. उसके पास अधिक खेत नही था जिसके कारण फसल भी नही हो पाती थी. वह कभी -कभी अंडों या कभी मुर्गियों को बेच कर रसोई समान लाता था. एक बार मुर्गियों ने अंडे दिए तो एक अंडा सुनहरा था. रामु ने उस अंडे को ध्यान से देखा वह सोने का ही था. वह बहुत खुश हुआ. उसको समझते देर नही लगा कि यह सुनहरी ने ही दिया है. उसने अंडा संभाल कर रख दिया. अगले दिन फिर अंडों में

एक सोने का निकला. अब रामु सब सोने के अंडों को जमा करने लगा. जरूरत पड़ने पर वह उनको बेच कर उनके लिए दाना और रसोई समान खरीद लाता.

रामु कुछ दिन तो सामान्य रहा. फिर उसके मन मे लालच ने जगह बना ली. उसने सोचा सुनहरी रोज एक अंडा देती है अगर उसके सारे अंडे एक बार मे निकाल लूं तो क्या बुराई है. ऐसा सोचकर उसने सुनहरी को मार दिया. पर यह क्या न सोने के अंडे मिले न सुनहरी रही. वह दौडकर घर के अंदर आया तो देखा सारे सोने के अंडे माटी बन चुके थे. रामु सिर पकड़ कर रोने लगा. उसे अपने किये पर पछतावा हुआ. काश की उसने लालच न किया होता तो वह सुनहरी के अंडों से अपनी गरीबी दूर कर सकता था, पर अब क्या हो सकता था. ज्यादा लालच सदा ही बुरा होता है.

सीख - लालच बुरी बला है ज्यादा लालच से बनता काम भी बिगड़ जाता है.

संस्मरण - लगन

लेखिका - पद्यमनी साहू

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री घनश्याम सिंग साहू जी का जन्म दुर्ग जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था. बालक घनश्याम बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुध्दि के थे. वह अपनी माता पिता की सबसे छोटे सन्तान थे.

बात उन दोनों की है जब बालक घनश्याम कक्षा 6वी में अध्ययन रत थे. उनके बड़े भाई हारमोनियम वादन की शिक्षा ले रहे थे. मास्टर जी घर में आते और उन्हें हारमोनियम सिखाते. बालक घनश्याम उन्हें बहुत रुचि लेते हुये देखा करते.

उन्हें भी हारमोनियम बजाने की बड़ी इच्छा होती. मास्टर जी उन्हें यह कह कर रोक देते की तुम अभी बहुत छोटे हो. प्रतिदिन भाई के अभ्यास करने के बाद बालक घनश्याम हारमोनियम निकाल कर स्वयं से अभ्यास करने लगा.

बालक घनश्याम के भाई ने कुछ समय के बाद अभ्यास करना छोड़ दिया. किन्तु घनश्याम ने अभ्यास जारी रखा. फिर क्या था वह बालक खुद से धुन बनाने लगा. कुछ ही समय मे वह बहुत अच्छा हारमोनियम वादक बन गया.

अपने गाँव में ही मित्र मानस मण्डली की बुनियाद रखी. गाँव के कुछ युवकों को संगीत सिखाया. विगत 35 वर्षों से उनकी मण्डली अनवरत कार्यशील है. वर्तमान में श्री घनश्याम सिंग जी दुर्ग भिलाई राजनादगांव इलाके में अच्छे हारमोनियम वादक के साथ साथ बहुत अच्छे गायक ढोलक वादक राम चरित मानस के व्यख्याकार, मंच संचालक एवं गीत कविता व कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं.

वह होनहार लगनशील बालक अब कई लोगो को निःशुल्क हारमोनियम वादन की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं. हारमोनियम वादन की लुप्त होती कला को फिर से नव जीवन प्रदान कर रहे हैं.

किसी भी कार्य को करने की लगन व प्रबल इक्छा शक्ति यदि मन में है तो हम भी वह कर सकते है जो बालक घनश्याम व एकलव्य ने कर दिखाया.

Wind and the Sun

Author - Dilkesh Kumar Madhukar

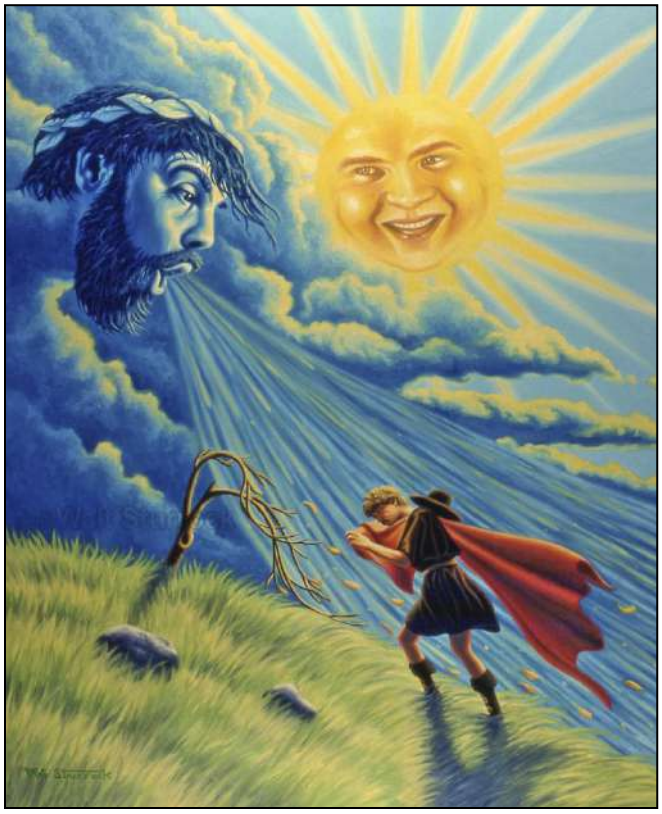

The wind was very proud of its power and thought that he is the strongest in the world. The wind challenged sun with a bet. The challenge was to get a traveler who was walking through the field below, to take his coat off. The first one to get the man's coat off would be declared the winner.

The wind took the first try and started blowing harder. It kept trying to blow the jacket off the man but the stronger the wind blew, the tighter the man held his coat. After a while the wind was too tired and could not blow anymore. As soon as the wind gave up the sun came forward. It shone brightly over the man. The traveler was suddenly feeling hot so he undid his buttons one by one, took off his jacket and threw it aside.

The wind was so embarrassed.

Learning – Do not be arrogant.

Difficult words -

Arrogant - घमंडी	Strongest – सबसे ताकतवर
Challenge - चुनौती	Traveler - यात्री
Suddenly – अचानक	Took off - निकालना
Threw – फेंकना	Aside - एक किनारे
Embarrassed - लज्जित होना	

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको **यह** अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

आकाश का फ्रिज

लेखिका - पुष्पा शुक्ला

कल रात बादलों से बर्फ गिरने लगी. बड़ी - बड़ी, गोल - गोल, तड़- तड़ , तड़ - तड़. टॉमी बाहर सोया था, बेचारे के सर पर एक जमकर पड़ी. कूँ- कूँ करता अंदर आया. मुझे तो बड़ा मजा आ रहा था. मैंने तो चुपके से दो - चार खाई भी. ठंडी- ठंडी, सफेद -सफेद रसगुल्ले जैसी. मुझे देख टॉमी भी खाने लगा. वह जैसे ही खाने को करता वे घुल जातीं. पर मुझे एक बात समझ नहीं आई की बादलों में बर्फ़ जमी कैसे? क्या उनके पास बहुत बड़ी - सी फ्रिज है?

इस कहानी को पूरा करके बहुत से पाठकों ने भेजा है. कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

पद्यमनी साहू व्दारा पूरी की गई कहानी

यही सोचते-सोचते मैं सो गया. जब घड़ी में 6 बजे तब मम्मी मुझे जगाने आई. जागो बेटा स्कूल जाना है. मैं झट से जाग गया क्योंकि मुझे देर से स्कूल जाना पसंद नहीं है. हमे समय पर स्कूल जाना चाहिए. मैं जल्दी स्कूल पहुँचने के लिए उतावला हो रहा था. रात वाली बात दोस्तो को जो बतानी जो थी.

कक्षा में पहुँचते ही मैंने बर्फ गोले वाली बात बताई. मेरे सभी दोस्त मेरी बातें ध्यान से सुन रहे थे. मेरे एक दोस्त ने बताया कि उसने भी बादल से बर्फ के गोले गिरते देखे हैं. मुझे समझ नही आया कि इतने सारे बर्फ गोले कहां से आये.

इतने में हमारी शिक्षिका कक्षा में आ गईं. हमे बातें करते देख बहुत प्यार से पूछने लगीं कि किस बात पर चर्चा हो रही है. मैने रात वाली सारी बात बताई और पूछने लगा कि क्या बादल में बहुत बड़ा फ्रिज है. मेरे सवाल पर शिक्षिका हँसने लगीं. इसके बाउ उन्होने प्रोजेक्टर ऑन किया और हमे बताया -

“बच्चो वर्षा का जल नदी तालाब झील नाले सागर व महासागर में जमा होता है. वह पानी लगातार वाष्पित हो कर ऊपर जाता है और बादल बनता है. ये बादल धरती से बहुत ऊँचाई पर होते हैं. जैसे जैसे हम ऊपर जाते हैं तापमान कम होता

जाता है. शून्य डिग्री तापमान पर पानी बर्फ बन जाता है. अधिक ऊंचाई पर मौजूद बादल में पानी की बूंदे बर्फ बन जाती हैं जो बर्फ के गोले के रूप में गिरती हैं. हमे यह सब जान कर बहुत अच्छा लगा. मेरे दोस्त ने कहा अब पता चला कि ऊपर फ्रिज कैसे बना. हम सब हँसने लगे."

कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की कहानी

मैंने सोचा क्यूं न दादी से पूछ लिया जाए कि क्या आसमान में बहूत बड़ा फ्रिज है. दादी ने बताया कि नही बेटा ऐसा नही है. कभी कभी बारिश की बूंदे बर्फ के छोटे छोटे गोले के रूप में गिरती हैं. उसे ओला कहते हैं. जो आज यहाँ पर गिर रहा है वह भी ओला ही है. मैं और मेरी बहन टॉमी को लेकर ओला खाने और उससे खेलने के लिए घर के बाहर गली में आ गए. गली में बहूत सारे बच्चे खेल रहे थे. टॉमी ओला खाने को दौड़ता तो ओला उसके मुंह मे जाने से पहले ही पिघल कर पानी बन जाता. टॉमी परेशान होकर दूसरा ओला पकड़ता तो फिर वही होता. वह परेशान होकर वह एक जगह बैठ गया और हम बच्चो को मस्ती करते हूए देखने लगा. मैं और मेरी बहन व आसपास के सभी बच्चे ओलों को खाने व उन्हें एक दूसरे पर फेंकने लगे. सभी अधिक से अधिक ओले इक्कठा करने की कोशिश करते पर ओला देखते ही देखते पानी मे बदल जाता. ऐसा तब तक चलता रहा जब तक ओला गिरना बंद नही हूआ. जब धूप निकली तब मैंने अपने घर के छोटे से बगीचे जहाँ मम्मी ने कुछ सब्जियां लगाई हैं, देखा कि ओले गिरने से लौकी कद्दू और टमाटर के फल व पौधे पूरी तरह से खराब हो गए है और घर की खपरैल भी कई जगह से टूट गयी है. पापा ने बाद में उसे ठीक किया. पापा ने बताया कि ओला गिरने से खेत मे लगी गेहूं की फसल को भी बहूत नुकसान हूआ है. आज हम सभी बच्चो को प्रकृति की शक्ति का अहसास हूआ और आसमान से गिरने वाली आफत का भी पता चला. हम सभी ने मिलकर ओले के साथ बहूत मस्ती मज़ा किया व खेलते रहे. कुल मिलाकर आज का दिन हम बच्चो के लिए मस्ती मज़ा व एकदम नया अनुभवों से भरा हुआ रहा.

अगले अंक के लिये इस मज़ेदार कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

अधूरी कहानी - झील का राक्षस

एक जंगल था. उसमे बहुत से जानवर रहते थे. जंगल के बीच में एक झील थी जिसका पानी जंगल के सभी जीव जंतु पीते थे. एक दिन की बात है जंगल की झील से एक राक्षस निकला. उसने सभी जंगल में रहने वालों से कहा - “आज के बाद अगर किसी ने इस झील का पानी पिया तो में उसे खा जाऊंगा.” यह सुन सभी जानवर भयभीत हो गये. उस दिन के बाद से कोई भी उस झील का पानी पीने नही जाता था.

कुछ समय बाद जंगल में सूखा पड़ गया. जंगल के सभी छोटी-छोटी नदियाँ सूख गयी. फिर एक दिन सभी जानवर इकट्ठा हो कर उस झील के पास गए जहाँ राक्षस रहता था. सभी जानवरों ने बोला - “इस झील के महाराज कृपया बाहर आए और हमारी परेशानी सुने.” इतना बोलते ही राक्षस बाहर आ गया. वह बहुत विशाल और डरावना था. वह गुस्से से बोला- क्यों मुझे जगा दिया?”

सभी जानवर ने बोला - “महाराज कृपया कर जब तक इस जंगल में सुखा परा है तब तक इस जंगल के सभी जानवरों को पानी पीने दीजिये महाराज..!!”

यह सुन राक्षस तिलमिला उठा उसने कहा - “इस झील के अंदर किसी ने पैर भी रखे तो में उसे खा जाऊंगा..!!” यह बोल राक्षस वापस पानी में चला गया. अब सभी जानवर दुखी होकर एक पेड़ के नीचे बैठ गए. तभी उस जंगल के एक सबसे बूढ़े बंदर ने कहा - “सुनो में एक उपाय बताता हूँ ..!!”

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं. कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

सेवती चक्रधारी की कहानी

घने जंगल मे बहुत सारे जानवर और जीव जन्तु रहते थे. उन्ही जीव जन्तु मे एक था टिड्डा और एक थी चीटी. दोनो एक दूसरे के पड़ोसी थे और बिल्कुल एक दूसरे के विपरित. टिड्डा आकार मे बड़ा होकर भी बहुत आलसी था. खाता-पीता और सो जाता था. न ही कोई शारीरिक काम करता और न ही कोई शारीरिक खेल

खेलता. ठीक इसके उल्टे चीटी आकार मे छोटी थी और मेहनती थी. चीटी रोज अपने से बड़े आकार के खाने की चीजो को एकत्रित करती. उसे ऐसा करते देख टिड्डा उसका मजाक उड़ाता और कहता कि "तुम कितनी मूर्ख हो जो रोज खाना जमा करती हो. मुझे देखो मै कभी खाना जमा नही करता हूँ. तुरन्त खोजता हूँ और खाता हूँ.'' चीटी ने कभी टिड्डे की बात का बुरा नही माना. वह टिड्डे की बात सुनकर मुस्कुरा देती.

साल भर बीतने के बाद एक दिन टिड्डा बहुत बीमार पड़ गया. उसको बहुत कमजोरी लग रही थी. वह चल भी नही पा रहा था. चीटी ने जब उसकी हालत देखी तो उसे डाक्टर के पास ले गई. डाक्टर पहले से जानता था कि टिड्डा बहुत आलसी है. डाक्टर ने टिड्डे से कहा - "देखो अगर तुमने शारीरिक काम नही किया तो बहुत जल्दी तुम किसी गंभीर समस्या मे पड़ सकते हो. शारीरिक काम या खेल शरीर के लिए बहुत जरूरी हैं." डाक्टर ने बात आगे बढ़ाई - ''कुछ दिन आराम करो और उसके बाद थोड़ा-थोड़ा काम शुरू करना वरना तुम फिर बीमार पड़ जाओगे.'' टिड्डा और चीटी घर आ गए.

<u>आलसी टिड्डा और मेहनती चींटी</u>

लेखक -इन्द्रभान सिंह कंवर

एक जंगल में एक आलसी टिड्डा रहता था. उसी जंगल में एक चींटी भी रहती थी. वह टिड्डा रात दिन जंगल में मस्ती करते हुए इधर उधर घूमता रहता था. उसे न आगे की चिन्ता रहती न पीछे की. बस वह रात दिन अपनी मस्ती में जीता. चींटी रात दिन बरसात और सर्दियों के मौसम के लिये भोजन एकत्रित करने के लिये दिन-रात मेहनत करती रहती थी, ताकि बरसात और सर्दी का मौसम आराम से

काटा जा सके. एक दिन वह चींटी भोजन की खोज करते हुए टिड्डे के इलाके में जा पहुँची. टिड्डे ने चींटी को देखकर पूछा ये तुम क्या कर रही हो? तब चींटी ने उसे बताया कि वह बरसात और सर्दियों के लिये भोजन एकत्रित कर रही है. इस बात को सुनकर टिड्डा जोर से हंसने लगा और बोला तुम अभी से आगे के बारे में सोच रही हो. इतनी मेहनत कर रही हो. मुझे देखो मैं कितना मजे से जी रहा हूँ. इस तरह से उसने चींटी का खूब मजाक उड़ाया. फ़िर गाना गाते हुए मस्ती से उड़ गया. चींटी उसकी बातों को अनसुना करते हुए अपने काम में लग गयी.

कुछ समय बात बरसात का मौसम आया. जंगल में चारों तरफ़ पानी भर गया. उस टिड्डे के पास न रहने के लिये घर है और न ही खाने के लिये खाना. टिड्डा भूख के मारे सूख कर पतला हो गया. तभी उसके बगल से गाना गाते हुए चींटियो की कतार गुजरी. उसमे से वही मेहनती चींटी बाहर आयी और टिड्डे से उसका हाल-चाल पूछा. तब टिड्डा ने उसे अपने बुरे हाल और भूख के बारे में बताया. चींटी को टिड्डे पर बहुत दया आयी. वह उसे टीले पर बने अपने घर पर ले गयी. टिड्डा ने वहाँ जाकर देखा कि चींटी के पास तो खाने का बहुत सारा सामान पहले से रखा है. यह देखकर टिड्डा ने पूछा कि तुम्हारे पास खाने का इतना सारा सामान कहाँ से आया. तब वह चींटी ने उसे बताया कि उस समय जब तुम खूब मस्ती भरी जिन्दगी जी रहे थे और मेरा मजाक उड़ा रहे थे, तब मैं इसी के लिये मेहनत कर रही थी और अब समय आने पर इसका उपयोग कर रही हूँ. टिड्डे को अपनी बातों पर बहुत पछतावा हुआ. उसने चींटी से माफ़ी मांगी. आगे चींटी की ही तरह मेहनत करने का वचन भी दिया.

कहानी से सीख -खुशी से जिन्दगी जीना अच्छी बात है, मगर हमें अपने आने वाले कल का भी ख्याल रखना चाहिये. साथ ही सदैव परिश्रम करते रहना चाहिए.

सच्चा मित्र

श्रीमती संध्या पैकरा

एक जंगल मे एक टिड्डा और एक चींटी रहते थे. दोनो में बहुत गहरी मित्रता थी. दोनो हर काम मिलजुल कर करते और जो भी मिलता उसे मिल बांट कर खाते थे. लेकिन टिड्डा कामचोरी करता था और थक जाने का बहाना करके अधिकांश समय आराम करता जबकि चींटी दिन भर कुछ न कुछ खाने की चीज ढूंढते रहती जो भी मिलता उसे बराबर टिड्डे को भी देती थी और आगे के लिए कुछ बचाकर भी रखती थी.

बारिश में कम पानी गिरने के कारण गर्मी में जंगल मे भीषण सूखा पड़ गया. पेड़ पौधे सुख गए. जंगल के दूसरे बड़े जानवर दूसरे जंगल मे चले गए लेकिन बेचारे चींटी और उसका दोस्त टिड्डा वही जंगल मे ही रहने मजबूर थे. अब चींटी रोज खाना ढूढने जाती पर बहुत ही कम खाने के लिए कुछ मिल पाता. इधर टिड्डा ज्यादा मेहनत नही करता और दिनभर आराम करता रहता. कुछ दिनों बाद जंगल मे कुछ भी खाने की चीज नही मिलने पर चींटी अपने बिल में इक्कठा करके रखे हुए खाने की वस्तुओं से अपना दिन निकालने लगी. इधर टिड्डा भूख से मरने की स्थिति में पहुच गया. वह अपनी दोस्त चींटी के पास आकर खाना मांगने लगा. पहले तो चींटी ने उसे समझाया कि तुम्हे जो भी मिला तुमने उसी समय खा लिया और भविष्य के लिए नही संचय किया जिसके कारण आज यह बुरा दिन देख रहे हो. टिड्डे को चींटी की बात समझ आ गयी. उसके बाद एक सच्चे मित्र की भांति चींटी ने अपने नासमझ दोस्त टिड्डा को अपने संचय किये हुए खाद्य सामग्री में से खाने को दिया. इस प्रकार से चींटी ने अपने दोस्त की जान बचाई. उसके बाद

हमेशा दोनो मिलकर खाना ढूंढते और कुछ आगे भविष्य के लिए बचाकर रखते और कुछ को खाते. इस प्रकार दोनो ने मिलजुल कर विकट परिस्थितियों से लड़कर गर्मियों में भी हंसी खुसी जीवन बिताने लगे. दोनो की दोस्ती अब और बहुत गहरी हो गई.

शिक्षा: - सच्चा मित्र वही जो समय पर काम आए.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

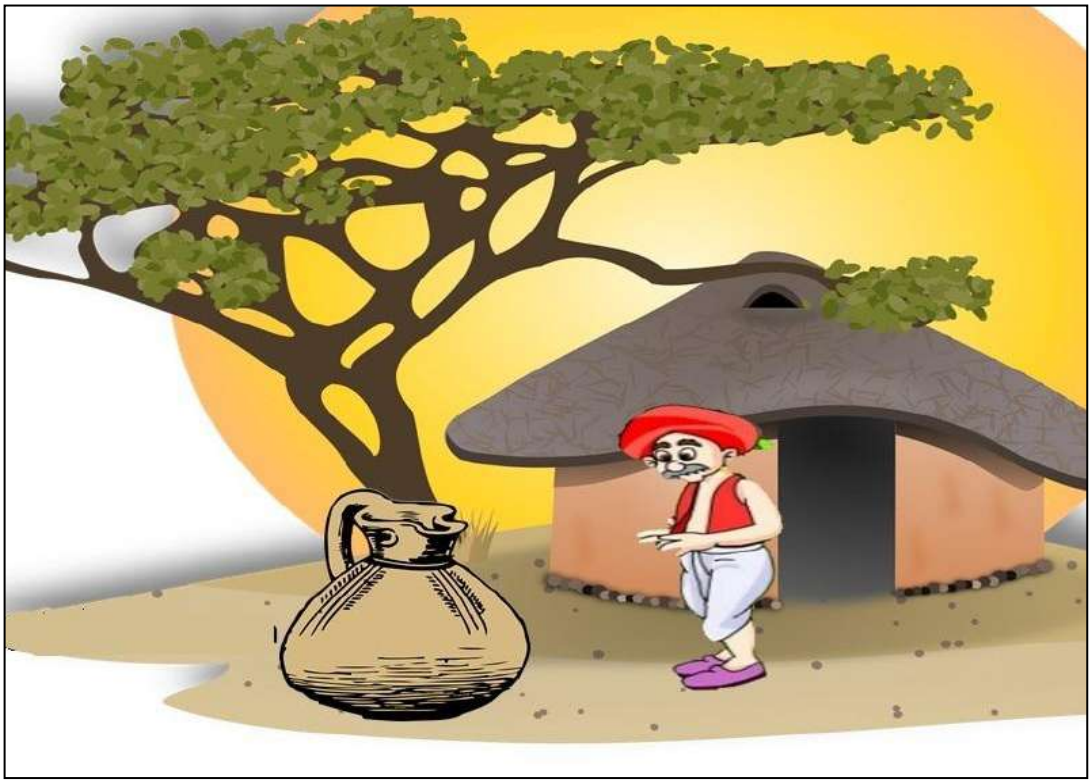

यात्रा वृतांत - कुटुमसर गुफा

लेखिका - पद्यमनी साहू

साल सागौन के आसमां से बातें करते ऊँचे ऊँचे पेड़ नीचे हरी हरी घास की चादर बहुत ही सुहावना नज़ारा था. जगदलपुर के ये वन छत्तीसगढ़ की धरती की शोभा बढ़ा रहे थे. ऐसा दृश्य जो अनायास ही किसी का भी मन अपनी ओर आकर्षित कर ले. जगदलपुर के इन्ही जंगलो के बीच मे प्रकृति की एक अनुपम रचना है - कुटुमसर गुफा. गुफा के अंदर जाने के लिये एक छोटा सा रास्ता है. नीचे उतरने के लिए सीढ़ी बनी है. पहले चट्टानों से होकर ही नीचे जाना पड़ता था. अंदर सूर्य का प्रकाश नही पहुँच पाता इस लिए यहाँ घना अंधेरा रहता है. प्रकाश के कृत्रिम स्रोतों से यहाँ प्रकाश की व्यवस्था की गई है.

आगे जाने पर हमे पानी के छोटे छोटे कुंड मिले जिसमे छोटी छोटी मछलियां थीं. ये मछलियां अन्धी मछली के नाम से जानी जाती हैं. ये मछलियां सदैव अंधेरे में रहती है इसलिए इनकी आंखें नहीं होती और इन्हें अंधी मछली कहते हैं.

हम बड़े ही उत्साह से आगे बढ़ रहे थे. गुफा में लगातार पानी का रिसाव होता रहता है इस कारण चट्टाने फिसलनदार हैं. हम काफी सम्हल कर चल रहे थे. आगे बढ़ने पर हमने गुफा की दीवारों पर अनेक मनमोहक आकृतियां देखीं. पानी में घुला हुआ चूना पानी के बूंद-बूंद टपकने के कारण जम गया था और अब मनोहारी आकृतियों के रूप में दिख रहा था. यह आकृतियां झूमर की लड़ जैसी दिखती हैं. गुफा लगभग 1 किलोमीटर लम्बी है. हमे बड़ी उत्सुकता थी कि गुफा के अंतिम छोर पर क्या होगा. कुछ दूर जाने पर हमारी जिज्ञासा शांत हो गई. गुफा के अंत में एक शिवलिंग स्थापित है जिसमें फूल पत्र चढ़े थे. शिवलिंग के दर्शन कर हम इस अद्भुत व प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर गुफा के बारे में बातें करते करते हुए हम बाहर आ गये.

तो बच्चों इस बार छुट्टियों में कुटुमसर गुफा देखने ज़रूर जाना.

विज्ञान दिवस (28 फरवरी) पर विशेष

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस: 'रमन प्रभाव' की खोज के स्मरण का दिन

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

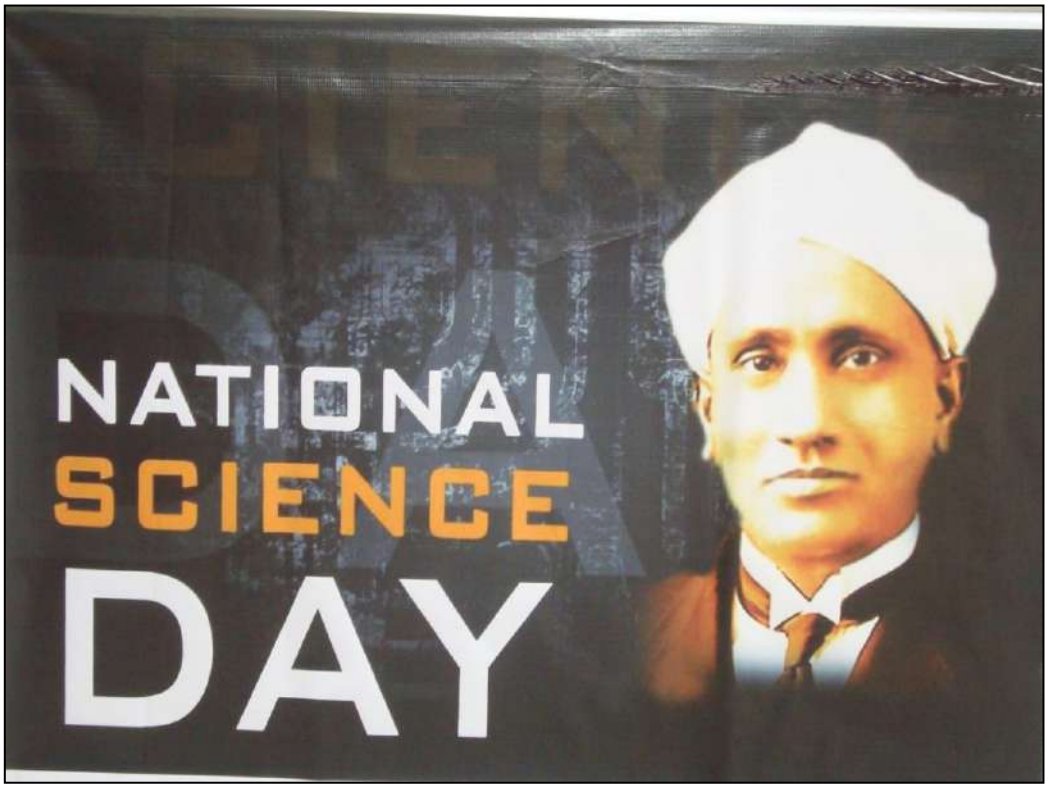

28 फरवरी 1928 को चन्द्रशेखर वेंकेट रमन ने लोक सम्मुख अपनी विश्व प्रसिध्द खोज 'रमन प्रभाव' की घोषणा की थी. 'रमन प्रभाव' के लिए ही 1930 में सीवी रमन को नोबेल पुरस्कार मिला था। राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् एवं विज्ञान मंत्रालय व्दारा रमन की खोज की समृति तथा विज्ञान से लाभों, युवाओं एवं बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विज्ञान अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करने तथा आमजन में जागरूकता लाने के उद्देश्य से 1986 से प्रत्येक वर्ष 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है. विज्ञान दिवस के अवसर पर स्कूल,

कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है जिनमें विज्ञान विषयक निबंध लेखन, विज्ञान मॉडल निर्माण, प्रोजेक्ट वर्क, विज्ञान प्रदर्शनी, क्विज काम्पटीशन, भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है. इन कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न स्तर पर विद्यार्थियो में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं रुचि को परखा और प्रोत्साहित किया जाता है. विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद् 1999 से थीम आधारित आयोजन करता है. 1999 में विषय था 'हमारी बदलती धरती'. जबकि 2018 के आयोजन का थीम विषय था एक 'सतत् भविष्य के लिए विज्ञान'. इसी कड़ी में 2019 का विषय है 'जनमानस के लिए विज्ञान और विज्ञान के लिए जनमानस'. कह सकते हैं कि राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 'रमन प्रभाव' की खोज को याद करने का दिन है.

चंद्रशेखर वेंकटरमन का जन्म 7 नवम्बर 1888 को तमिलनाडु में कावेरी के तटपर स्थित तिरुचिरापल्ली नामक स्थान पर एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था. आपकी माता पार्वती अम्मा कुशल गृहिणी और पिता चन्द्रशेखर भौतिकशास्त्र एवं गणित के प्राध्यापक थे. घर पर शिक्षा और संगीत का माहौल था. पिताजी के वीणा वादन करते समय तारों के कम्पन से निकली मधुर ध्वनि बालक रमन को अपनी ओर खीचती. वह सोचते कि इन तारों को छेड़ने से एक लय, प्रवाह, आरोह-अवरोह में मनमोहक ध्वनि कैसे उत्पन्न हो सकती है. यही जिज्ञासा बाद में उनके ध्वनि सम्बंधी शोधों का आधार भी बनी. चार वर्ष की उम्र में ही पिता का तबादला विशाखापट्टनम हो जाने से रमन की प्रारंभिक शिक्षा भी वहीं शुरु हुई. यहां घर के सामने लहराता सागर का नीला जल रमन का ध्यान आकर्षित करता. बालमन सोचता कि घर और सागर के जल में यह अन्तर कैसे. मकान की खिड़की से वह सागर की लहरों को अठखेलियां करते देखते रहते मानो जल के नीलेपन के रहस्य

का कोई तोड़ खोज रहे हों. 12 वर्ष की आयु में ही आपने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी विशेष प्रतिभा का परिचय दे दिया था. तभी पिता उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजना चाह रहे थे. लेकिन चिकित्सक के यह कहने पर कि इंगलैंड का कठोर वातावरण रमन के स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं रहेगा, तब रमन ने मद्रास के प्रेसिडेंसी कॉलेज में 1903 में बी.ए. प्रवेश लिया और विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी में प्रथम आकर गौरव अर्जित किया. 1907 में एम.ए. गणित प्रथम श्रेणी में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण किया. कालेज की कक्षाओं में रमन कम दिखाई देते बल्कि विज्ञान प्रयोगशाला में ही समय व्यतीत करते. पर प्राध्यापकों का भी सहयोग रहता और वे नियमित कक्षा आने के नियम से ढील दिए रहते क्योंकि वे सभी जानते थे कि रमन कुछ विशेष करने वाला है और फिर परीक्षाओं में भी हमेशा आशा से अधिक अंक प्राप्त किया. परास्नातक करते समय ही 1906 में 'प्रकाश विवर्तन' विषय पर शोध पत्र लिखा जो लंदन से प्रकाशित विश्व प्रसिध्द पत्रिका 'फिलसोफिकल मैगजीन' में छपा और चर्चित हुआ. तत्कालीन भारत में विज्ञान के शोध केंद्रों का अभाव था. तो 1907 में ही आपने भारत सरकार के वित्त विभाग की परीक्षा में बैठे और प्रथम आये. तब असिस्टेंट एकाउंटेंट जनरल के रूप में कलकत्ता में कार्यभर ग्रहण किया. ऐश्वर्य का जीवन जीने हेतु वहां पद, प्रतिष्ठा, उच्च वेतन सभी कुछ था पर रमन का मन तो विज्ञान की दुनिया में ही रमा था. फलतः एक दिन कार्यालय से घर आते समय 1876 में स्थापित 'इंडियन एसोसिएशन फार दि कल्टीवेशन ऑफ साइंस' का बोर्ड देख वहां पहुंच गये और अपने प्रयोग करने हेतु अनुमति प्राप्त कर ली. तो नौकरी के साथ-साथ सुबह-शाम चार-चार घंटे 'ध्वनि में कम्पन एवं कार्य' के क्षेत्र में प्रयोग हेतु प्रयोगशाला में बीतने लगे. वह स्कूली बच्चों को प्रयोगशाला लाकर विज्ञान के विभिन्न प्रयोग करके दिखाते. लेकिन इसी बीच रंगून और नागपुर स्थानान्तरण हो जाने से प्रयोग प्रक्रिया रुक गई. लेकिन जल्दी ही आप पुनः कलकत्ता आ गये और बाधित प्रयोग

फिर नई ऊर्जा के साथ प्रारम्भ हो गये. तो यह संस्थान 1907 से 1933 तक किये गये आपके प्रयोग और समर्पण का साक्षी रहा.

कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति आशुतोष मुखर्जी के कहने पर 1917 में आपने नौकरी से त्यागपत्र देकर भौतिकी का प्राध्यापक बनना स्वीकार कर लिया. 1921 में विश्वविद्यालयों के कांग्रेस में कलकत्ता विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने हेतु ऑक्सफोर्ड जाना हुआ. लौटते समय भूमध्य सागर के जल का नीलापन देखकर आप आश्चर्यचकित रह गए. विचार किया कि समुद्र के जल में नीलापन किस कारण से है. उपकरण लेकर आप जहाज के डेक पर आ गये और घंटों सिन्धु जल का अवलोकन-निरीक्षण और प्रयोग करते रहे. इस दौरान पूर्व में विज्ञानवेत्ताओं द्वारा खोजे गये सिध्दांत और निष्कर्ष आंखों के सामने घूमते रहे कि जल का नीलापन समुद्र के अन्दर से प्रकट हो रहा है. पर आप उनसे सहमत नहीं हो पा रहे थे. तब रमन ने इस रहस्य की खोज करने का संकल्प लिया. भारत आकर आपने प्रयोगशाला में 1921 से 1927 तक शोध किया जिसकी परिणति 'रमन प्रभाव' के रूप में हुई. यह शोध 'नेचर' पत्रिका में सर्वप्रथम छपा था. 'रमन प्रभाव' प्रकाश का विभिन्न माध्यमों से गुजरने पर उसमें होने वाले भिन्न-भिन्न प्रकीर्णन के कारणों का अध्ययन है. 1924 में आपको रॉयल सोसायटी ऑफ लंदन का फैलो बनाया गया. 1927 में जर्मनी ने जर्मन भाषा में भौतिकशास्त्र का बीस खंडों एक विश्वकोश प्रकाशित किया. इसमें वाद्य यंत्रों से सम्बंधित आठवें खंड का लेखन रमन व्दारा किया गया. यह उल्लेखनीय है कि इस विश्वकोश को तैयार करने वाले आप एकमात्र गैरजर्मन व्यक्ति थे. उनके 2000 शोध पत्र विभिन्न अन्तरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हुए. 1948 में आपने सेवानिवृत्ति के बाद बेंगलुरु में 'रमन शोध संस्थान' की स्थापना की.

भारत सरकार ने 1954 में रमन के योगदान और वैज्ञानिक उपलब्धियों का वंदन करते हुए 'भारत रत्न' पुरस्कार प्रदान किया. रूस ने 1957 में 'लेनिन शान्ति पुरस्कार' भेंटकर सम्मानित किया. संचार मंत्रालय ने 20 पैसे का एक टिकट जारी कर आपकी स्मृति को अक्षुण्य बना दिया. अमेरिकन केमिकल सोसायटी ने 1998 में 'रमन प्रभाव' को अन्तरराष्ट्रीय विज्ञान के इतिहास की एक युगान्तकारी घटना के रूप में स्वीकार किया. रमन की यह खोज आज तमाम नवीन खोजों का आधार है. विश्व का यह महान भौतिकविद् 21 नवम्बर 1970 को अपने चाहनेवालों को अकेला छोड़ अंतिम यात्रा पर प्रस्थान कर गया. लेकिन जब तक दुनिया में भौतिकी का अध्ययन होता रहेगा तब तक 'रमन प्रभाव' अमर रहेगा और चन्द्रशेखर वेंकट रमन भी.

पर्यावरण,परम्परा अउ माटी बर परेम ले उपजे आजादी बर आदिवासी संघर्ष

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

कतको दिन के अंधियारी रात ल चिरत आजादी के सुरुज ह हमर देश म नव बिहान लाइस. लइका - सियान, हिन्दू - मुसलमान सबो जात धरम के साँझर मिझर कर्ज ले आजादी के सिरजन होइस. मनखे के मन म गुलामी के भाव ऊन ल हिनहर माने अउ उकर ऊपर जुलुम के होए के सेती होइस हाबे. उनकर मन के इही हिनहर भाव ह जुरिया के आजादी बर नवा सिरजन गढीस अउ फिरंगी मन ल हमर माटी ले भगाइस.

ए बात सिरतोन म सही हावे सिक्छा ले मनके के भीतर सुराज के भाव ल जनम लेथय. फेर के बात ल घला नई झुठला सकय के मनखे के अन्तस् के आरो ह

ओला सुराज बर साव चेत करथे. सिरतोन खुद के नीत अउ रीत ह टी स्वाधीनता आय.

अइसन त 1857 ल हमर देश म सुराज के पहिली संगराम मानथे फेर आदिम जनमन के भुइया बस्तर म गुलामी के बिरोध के भाव कतकोन पहिली के हवय. 1795 म अंग्रेज जे बी ब्लंट के बस्तर आये के बिरोध ले हो गए रहिस. बस्तर के आदिवासी मन भला भौतिक सुख सुविधा म पछुवाये रहिस फेर अपन सुवाभिमान बार मरे मिटे ल जानय. उनला अपन सन्सकीरीति, परब, सभ्यता अउ परियावरण के परेम रहिस. उकर हित अउ पिरित म उ मन अपन अंतस के अभिमान ल जोड़ के देखय. 1824 म नारायणपुर के परलकोट म जमीदार गैंद सिंह ह कैप्टन पेबे के जुलुम के विरोध म संघर्ष करत अपन परान गवां दीन. वोमन आजादी बर मिटगे. वोला परथम शहीद घला मानथय. धावड़ा पेड़ के डंगाली ल परतीक के रूप म पूजा घला कर उन ल आदिवासी समाज याद करथय.

आदिवासी समाज अपन माटी ले मया करय तभे अपन रीत परब के रख़्वार के रूप म पहचान बनाईन. 1842 ले 1963 में मेरिया मारिया विद्रोह म हिड़मा मांझी ले अगुवाई म दंतेवाड़ा म अपन देवी पूजा के विधि विधान अउ नरबलि के विरोध होए के सेती उकर आहत भाव ह आंग्ल मराठा शासन के विरोध म खड़ा होइस.

बस्तर के आदिवासी म जुर मिलके रहिस उकर इहि जुडा व ह उनला मजबूत करिस. राजा ले वोमन मया करय त गलत कर विरोध घला. जिहा राज के भलाई म पराण दे ल जान य उहे गलत ल घला नई छोड़य. 1876 के मुरिया विद्रोह राज बार कुनित अउ षड्यंत्र के बिरोध म झाड़ा सिरहा के रूप म नवा नायक ल आगू लाथय जेन मुरिया आदिवासी के विद्रोह जुलुम के खिलाफ अपन संगी मन संग मिल के लड़ीं. आदिवासी समाज आज आमा के डारा के रूप म एला प्रतीक रुप म सुरता करथय.

वनवासी भला जंगल ले परेम नई करहि एसनहा नई होवय. उनकर पराण ले बढ़के उनकर माटी ह हो थय. अपन सुख दुख के रुख राई जीव जिनावर संग बाँट थय अउ उकर पीरा म संग देखय. 1859 म नागुल दोरहा के कोई विद्रोह ह उकर इही भाव ल देखाथय. साल के पेड़ के काटे के विरोध म एक पेड़ म एक मुड़ी लगाके अपन प्राण के आहुति दे दीन. अंग्रेज सेना अउ ठेकेदार ले लडिन अउ ठेकेदारी प्रथा के अंत होइस.

एक अउ एक मिल गियारा होथे ए आदिवासी मन के एकता ल देख कहे जा सकत रहिस. परब, पूजा या परकृति के माध्यम ले हो अपन संगठन ले विरोधी मन ल पस्त कर देवय. पूरा बस्तर राज म आदिवासी संगराम के महानायक गुण्डाधुर के रुद्रप्रताप के शाशन काल म 1910 म होवय भूमकाल आंदोलन एकर पहिचान आय. जेमा केप्टनमेयर के दमन के सेती आदिवासी मन एक ले दूसर हाथ मिलाके अपन पहिचान बताइन.

सिरतोन जब मनखे के अन्तस् के आरो ल रोके जे उदिम होही, उकर धरम रीत के सङ्गे संग जिनगी के उछाह ल रोके के उदिम आय गुलामी अउ अपन मिलजुल के रहिके अपन माटी, परब के सन्मान करत अन्तस् के आरो ल उभारन त उही ह सुराज के आवाज बन्थय.

गौरैया बिन आँगन सूना

लेख - प्रमोद दीक्षित 'मलय'

आज से एक-दो दशक पूर्व तक हमारे घरों में एक नन्ही प्यारी चिड़िया की खूब आवाजाही हुआ करती थी. वह बच्चों की मीत थी तो महिलाओं की चिर सखी भी. उसकी चहचहाहट में संगीत के सुरों की मिठास थी और हवा की ताजगी का सुवासित झोंका भी. नित्यप्रति प्रातः उसके कलरव से लोकजीवन को सूर्योदय का संदेश मिलता और वह अपने नेत्र खोल दैनन्दिन जीवनचर्या में सक्रिय हो उठता. विद्यार्थियों के बस्ते खुलते और किताबें बोलने लगतीं. कोयले से पुती काठ की पाटियों में सफेद खड़िया से सजे अक्षर उभरने लगते. बैलों के गले में बंधी घंटियों की रून-झुन के साथ कंधे पर हल रखे किसानों के पग खेतों की ओर चलने को मचल पड़ते और महिलाएं गीत गाती हुई जुट जातीं व्दार-आँगन बुहारने में. और तभी आँगन में उतर आता कलरव करता चिड़ियों का झुण्ड. रसोई राँधने के लिए

अनाज पछोरते समय सूप के सामने वह फुदकती रहती. सूप से गिरे चावल के दाने चुगती चिड़ियाँ लोक से प्रीति के भाव में बँधी निर्भय हो सूप में भी बैठ सहजता से अपना भाग ले जाती. इतना ही नहीं, वह रसोई में भी निर्बाध आती-जाती और पके चावल की बटलोई में बैठ करछुल में चिपका भात साधिकार ले उड़ती.

यह प्यारी चिड़िया कोई और नहीं अपनी गौरैया थी, हाँ, अपनी घरेलू गौरैया. वह परिवार की एक सदस्य ही थी. लोकधर्मी कवि घाघ से लेकर आधुनिक कवियों तक को गौरैया ने प्रभावित किया है. तभी तो प्रगतिशील कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' कह उठते हैं - 'मेरे मटमैले आँगन में, फुदक रही प्यारी गौरैया.' लोक मे बहुप्रचलित एक काव्यात्मक उक्ति गौरैया के व्यवहार के व्दारा प्राकृतिक परिवर्तन के महत्व को ही रेखांकित करती है, ''कलसा पानी गरम है, चिड़िया नहावै धूर। चींटी लै अण्डा चलै, तौ बरखा भरपूर''.

आज इस गौरैया के जीवन पर संकट आ खड़ा हुआ है. उसके अस्तित्व पर खतरा मड़रा रहा है और हम है कि बेसुध सोये पड़े हैं. यूरोप, एशिया, अमेरिका, अफ्रीका, न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया में पायी जाने वाली घरेलू गौरैया की विश्व में छह प्रजातियों की पहचान हुई है. नगरों, कस्बों, गाँव, खेत-खलिहान में मिलने वाली गौरैया को 'हाउस स्पैरो' कहा जाता है. एक आकलन के अनुसार विश्व में पाये जाने वाले पक्षियों में गौरैया की संख्या सर्वाधिक है. हल्के भूरे-सफेद रंग के पंखों, भूरी चोंच और पीले पैरों वाली 25-30 ग्राम वजनी झुण्ड में रहने वाली इस चिड़िया को लगभग हर तरह की जलवायु पसंद है. एक समय में तीन बच्चे/अण्डे होते हैं। भोजन की तलाश में ये प्रतिदिन दो-तीन मील का चक्कर काटते हैं. अनाज के दाने, घास के बीज, छोटे कीड़े इनका प्रिय भोजन है लेकिन रोटियों के टुकड़े, ब्रेड भी ये चाव से खा लेते हैं.

तथाकथित विकास और प्रकृति के अत्यधिक दोहन-शोषण ने घरेलू गौरैया के प्राकृतिक आवास को छिन्न-भिन्न कर दिया है. बहुमंजिली इमारत के निर्माण और जंगलों की कटान से इसे घोसले बनाने को उपयुक्त स्थान नहीं मिल पा रहा. शहरी कॉलोनियों में पेड़ दिखते नहीं, छायादार निरापद जगह नहीं बची जहाँ वे अपने नीड़ का निर्माण कर सकें. सुपर मार्केट-मॉल संस्कृति के कारण घर-परिवारों में पैकेटबन्द अनाज और अन्य भोजन सामग्री आने से चुगने को दाने मिलना दूभर हो गया. मोबाइल टावर से निकलने वाली तरंगों ने इनकी प्रजनन क्षमता को कम कर दिया है. इस कारण इनके अण्डे पूर्णरूप से निषेचित नहीं हो पाते हैं और अण्डों से अविकसित बच्चों का जन्म हो रहा है. इन तरंगों नें उनकी दिशाशोधन प्रणाली को विकृत कर दिया है. फलतः ये बेजुबान पक्षी अपने राहों से भटक रहे हैं. शहरों में बिजली के तारों के जाल में अक्सर उल-हजय कर प्राण गवाँ बैठते हैं. चील, बाज, कौवा, कुत्ता, सियार, साँप जैसे प्राकृतिक दुश्मन इसके अण्डों और चूजों को खा जाते हैं.

बच्चे भी गौरैया और इसके छोटे बच्चों को पकड़ लेते हैं और इनके पंखों पर रंग लगा देते हैं जिसके कारण इन्हें उडान भरने में खासी परेशानी होती है. बच्चे इनके पैरों में धागा बाँध देते हैं जिस कारण धीरे धीरे वहाँ से पैर कमजोर होकर टूट जाता है, अन्ततः वह मर जाती हैं. किसानों व्दारा रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से अन्न, जल और मिट्टी प्रदूषित हुई है. कीड़ों के मर जाने से फसलें भले ही सुरक्षित हुई हो लेकिन इसने गौरैया के प्राकृतिक आहार कीड़ों को उनसे छीन लिया है. बच्चे च्यूगंम खाकर जहाँ कहीं भी फेक देते हैं और चिड़िया इसे कोई खाद्य पदार्थ समझ कर ज्यों ही चुगती है तो उसकी चोंच चिपक जाती है और छटपटाकर प्राण त्याग देती है. ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते ताप के

कारण भी गौरैया अपने आप को कमजोर महसूस कर रहे हैं. भोजन एवं जल की कमी, घोंसला बनाने के लिए उचित स्थान का न मिल पाने के कारणों से पिछले दो दशकों से इनकी संख्या में लगातार भारी गिरावट देखने में आ रही है। भारत ही नहीं वरन् सम्पूण विश्व में विभिन्न अनुसंधानों से प्राप्त निष्कर्ष बताते हैं कि इनकी संख्या में 70-80 प्रतिशत कमी हुई है. पौधों और पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए सन् 1963 में गठित अन्तरराष्टीय प्रकृति संरक्षण संघ ने भी घरेलू गौरैया की घटती संख्या पर चिंता व्यक्त करते हुए इसे 'लाल सूची' में रखा है और इसे संकटग्रस्त पक्षी घोषित किया है. ब्रिटेन की 'रॉयल सोसायटी ऑफ प्रोटेक्शन ऑफ बर्डस' भारत और विश्व के विभिन्न हिस्सों में वर्षों तक अध्ययन कर गौरैया को बचाये जाने के उपाय खोजने पर बल दिया है. ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी में इनकी संख्या बहुत तेजी से घटी है. नीदरलैण्ड ने तो इसे 'दुर्लभ प्रजाति की श्रेणी' में रखकर बचाने का संकल्प दिखाया है.

इन सब प्रयासों के चलते 20 मार्च 2010 को अन्तरराष्टीय स्तर पर पहली बार 'विश्व गौरैया दिवस' मनाया गया और दिल्ली राज्य सरकार ने 15 अगस्त 2010 को गौरैया को दिल्ली का 'राज्य पक्षी' घोषित किया. भारतीय डाक विभाग ने 9 जुलाई 2010 को 5 रूपये मूल्य का डाक टिकट जारी किया. गौरैया पर अमेरिका, कनाडा और बाँग्लादेश ने भी विभिन्न मूल्य वर्ग के डाक टिकट जारी किए हैं। 2014 में घरेलू गौरैया बचाओ अभियान के अन्तर्गत डाक विभाग ने गौरैया के चित्र का विशेष आवरण जारी कर गौरैया बचाओ मुहिम में जन सामान्य की सक्रिय भागीदारी की इच्छा व्यक्त की थी.

गौरैया को बचाने के लिए हम सभी को आगे आना होगा. अभियानों और गोष्ठियों से केवल जागरूकता लाई जा सकती है. लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं होगा. जरूरत ठोस कदम उठाने की है. हमें सामूहिक जिम्मेदारी निभानी होगी. अपने घरों और पास-पड़ोस में छायादार वृक्ष लगाने होंगे. प्लाई, गत्तों के टुकड़ों से घोंसलें बनाकर दीवारों में टाँग कर उन्हें वहाँ आने का आमंत्रण दें. छतों पर बर्तनों में पानी रखकर और अनाज के दाने बिखेर कर हम इसका साथ पा सकते हैं. अगर हम अभी नहीं चेते तो गिध्द की भाँति गौरैया को भी खो देंगे. यह हमारा दायित्व है कि हम पुरखों से प्राप्त इस पक्षी को आगामी पीढ़ी के हाथों में सौपते हुए सर उठाकर कह सकें कि हमने इसे मरने नहीं दिया. तो आज ही शुरु करें कल कहीं बहुत देर न हो जाये.

संस्मरण - अंजान प्रकृति प्रेम-अंजान प्रकृति सेवा

लेखक -इन्द्रभान सिंह कंवर

रोज सवेरे प्रातः 9:20 को जब मैं विद्यालय का गेट खोलने के लिये उसकी चौखट पर चढ़ता हूं, मुझसे पहले मेरे नन्हें-मुन्हें बच्चों का झुंड गेट पर खड़ा हो जाता है. जैसे ही गेट खुलता है, वे सभी उस ओर दौड़ते जहाँ बरामदे में पौधों पर पानी डालने के लिये प्लास्टिक के डिब्बे रखे होते हैं. फ़िर जो तेज पहुंचता डिब्बा उसका. उसको लेकर वह सीधे हैंडपम्प, नल की ओर दौड़ते और पानी भरकर सीधे अपने व्दारा रोपित पौधे के पास जाकर लग जाते हैं उसकी सेवा में उसके आस-पास की सफ़ाई में सुन्दरता में.

यही कार्य उनका रहता लघु और दीर्घ अवकाश के समय मना करने पर भी नही मानते. सभी शिक्षक धूप देखकर चिंतित रहते कि इतनी धूप में ये बच्चे क्या कर

रहे हैं? मगर उन्हें धूप की चिन्ता कहाँ. उन्होने तो इसे एक दैनिक जीवन के खेल में सम्मिलित कर लिया है.

उनके व्दारा रोपित कुछ पौधे अब उन बच्चों से बड़े हो चुके हैं. कुछ तो छाया देने लगे हैं और कुछ फलने-फूलने लगे हैं. जिनके नीचे वे सब बच्चे आनंद के साथ खेलते हैं, प्रतिदिन अपने छोटे -छोटे हाथों से मिट्टी का चारो तरफ़ घेरा बनाते उसको चिकना करते, और उस पर पानी डालते इस क्रिया को एक खेल बना लिया है. वे बच्चे इस बात से अंजान हैं कि वे किस तरह से प्रकृति की सेवा में लीन हैं, किस प्रकार वे अपना भविष्य सुरक्षित करने की राह पर अग्रसर हैं.

वे सब इन बातों से अंजान हैं पर मैं नही, मैं प्रतिदिन उनकी इन गतिविधियों पर नजर रखता हूँ, उनके पास जाकर उनको उत्साहित करता हूँ, उनकी फोटो खींचता हूँ, जिससे वे खुश होते हैं. उनके इस अंजान प्रकृति प्रेम और प्रकृति सेवा को देखकर गर्व महसूस होता है.

आज मेरे शाला प्रांगण में 200 से 300 पौधे हैं ,जिनमें कुछ तो बड़े होकर छाया भी देने लगे हैं. जिससे शाला का वातावरण भी सुन्दर और सुसज्जित लग रहा है. यह सब कुछ मेरे इन नन्हे-मुन्हे अंजान प्रकृति प्रेमी, प्रकृति सेवी बच्चों की सेवा का प्रतिफल है. मेरे प्यारे बच्चों आज तुम सब अंजान हो लेकिन कल जब तुम्हें पता चलेगा तब तुम लोगों को भी अपने -आप पर गर्व होगा जैसा की आज मुझे हो रहा है तुम लोगो की इस प्रकृति सेवा को देखकर.

पेड़ लगाओ - सेवा करो -और खुद का जीवन सुरक्षित करो ॥

अभिनंदन

लेखक - वेद प्रकाश शुक्ला

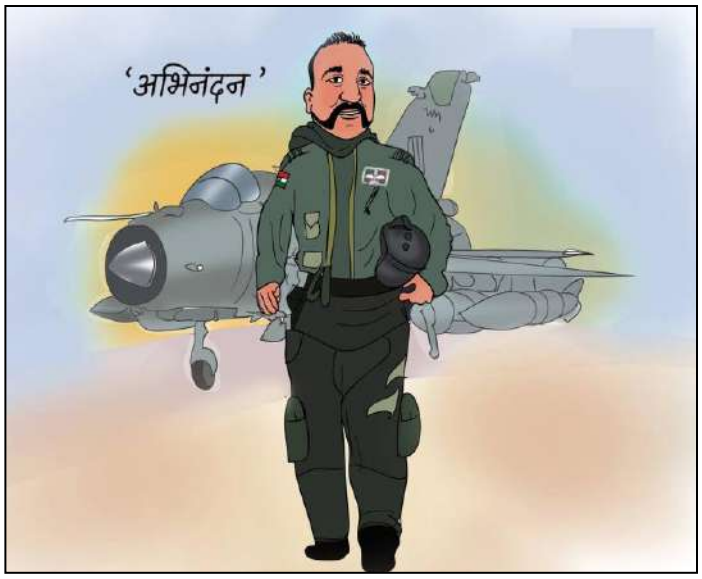

अ - अदम्य साहस का परिचय दे,

भारत का सीना फूला दिया।

भि - भिड़ा मिग21 एफ16,

पापीस्तान को रुला दिया।।

न -- नजर मिला दुश्मन से,

उसी के घर में दहाड़ा है।

न - न्योछावर समूचा देश तुम पे,

क्या वीर योद्धा हमने पाया है।।

द - दमकाकर माँ का चेहरा,

गर्वित हमें किया है तुमने।

न - न जाने कितनी वेदना,

पाक में सह लिया है तुमने।।

कहती है दादी

लेखक - बलदाऊ राम साहू

चटर-पटर मत खाना भैया,
यह बतलाती हैं दादी।

खटर-पटर मत करना भैया
यह समझाती हैं दादी।

इधर-उधर मत जाना भैया,
यह सिखलाती हैं दादी।

पटर-पटर मत कहना भैया
यह गुर सिखाती हैं दादी।

मन में रखना नेक इरादे
हरदम समझतीं हैं दादी।

काश ऐसा होता

लेखक - नेमीचंद साहू

अमीर और गरीब में,

दर्द का बंटवारा होता !

दुनिया में इतना सुंदर,

आश्चर्य भरा नजारा होता !

घर का इकलौता बेटा,

मॉ-बाप का सहारा होता !

बेटी हो या बेटा हो,

सभी को पुकारा होता !

गुरू के लिए चेला भी,

ऑखो का तारा होता !

आदर और सम्मान भरा

मंजिल का किनारा होता !

परिवार में भाई-भाई,

एक-दूसरे का वारा होता !

अपनत्व भाईचारे का,

मिल बहे नदी का धारा होता !

छोटा होता अरमान तो,

कम में ही गुजारा होता !

बड़े बनने की न चाह,

कितना प्यारा न्यारा होता !

प्रकृति से कर लगाव,

जीव सबको प्यारा होता !

पेड़ लगाये एक-एक,

लक्ष्य ऐसा हमारा होता !

शॉंति अमन का फूल खिले,

काश ऐसा दुबारा होता !

मीठे बोल आचरण से,

हर कोई दुलारा होता !

कर्म होगा तब महान,

यदि मन को मारा होता !

बनता वही इंसान जो,

जीतकर हारा होता !!

गुड़िया की होली (सार छंद)

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

छमछम करती गुड़िया रानी,
घर आँगन मे आई ।
अपने हाथो रंगे लेकर,
सबको खूब लगाई ।।

हाथो मे पिचकारी लेकर,
दादी को भीगाई ।
दौड़ दौड़ कर गुड़िया रानी,
सब को रंग लगाई ।।

मम्मी ने पकवान बनाई,
पापा भांग मिलाये ।
बच्चे बूढ़े सभी जनों ने,
झूम झूम कर गाये ।।

चलो हम अपना कर्तव्य निभायें

तृप्ति शर्मा

आज चलो हम देशभक्ति का पाठ पढ़ायें

सोए हुए हृदयों में स्नेह और करूणा का जल भर आये

कोई ना लूटे किसी का सुख चैन

आपस में भाईचारे का बांध इतना मजबूत बनाये

चलो हम अपना कर्तव्य निभाये

कोई भ्रष्टाचारी ना पैदा हो

ऐसा बीज नन्हे मुन्नों के मन में रोप आयें

वसुंधरा की पवित्रता को कायम रखने के लिये

हम अपने नवनिहालो को स्वच्छता का अर्थ समझायें

चलो हम अपना कर्तव्य निभायें

देश की बाहरी सीमा हो या भीतरी मैदान

हर जगह देशभक्ति का दीप जलायें

अपने विद्यार्थियों को सेना का त्याग समझायें

सब बच्चो के मन में ऐसी लहर बहायें

हर कोई लेकर दौड़े शमशीर

जब देश पर संकट आये

चलो हम अपना कर्तव्य निभायें

छुट्टी छुट्टी

लेखिका - कविता चौबे

बस्ते की छुट्टी करवाने,

देखो छुट्टी आयी जी,

पढ़ाई लिखाई का भूत भगाने,

देखो छुट्टी आयी जी,

जाने कितने पाठ, पहाड़े,

हम तो रट रट कर ही हारे,

जहाँ भी देखो,कापी पुस्तक,

जाएं कहाँ फिर हम बेचारे,

अब तो मस्ती खूब करेंगे,

खाएंगे दूध मलाई जी,

बच्चों का दुःख दूर भगाने,

देखो छुट्टी आयी जी,

दोपहरी कंचे खेलेंगे,

कच्ची पक्की अमिया तोड़ेंगे,

खट्टी खट्टी इमली के लाटे,

चुन्नू मुन्नू मिलकर गटकेंगे,

ठंडी ठंडी कुल्फी मलाई,

लेकर छुट्टी आयी जी,

मास्टर जी से कह दो जाकर,

अब तो छुट्टी आयी जी।

जंगल की होली

लेखक - षड प्रकाश किरण कटेन्द्र

मुन्नू खरगोश ने बनाई टोली

खेलेंगे सब मिलकर होली

फूल पलाश का लाया भालू

रंग बनाई हिरणी शालू

कोयल रानी गीत बनाई

सबको उसने खुब नचाई

बब्बन बंदर लाया गुलाल

बजा नगाड़ा हुआ धमाल

सभी ने खेली खुब होली

मिले गले प्यार की बोली

राजा शेर ने दी बधाई

रहो मिलकर न करो बुराई

जाड़ भागत हे

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

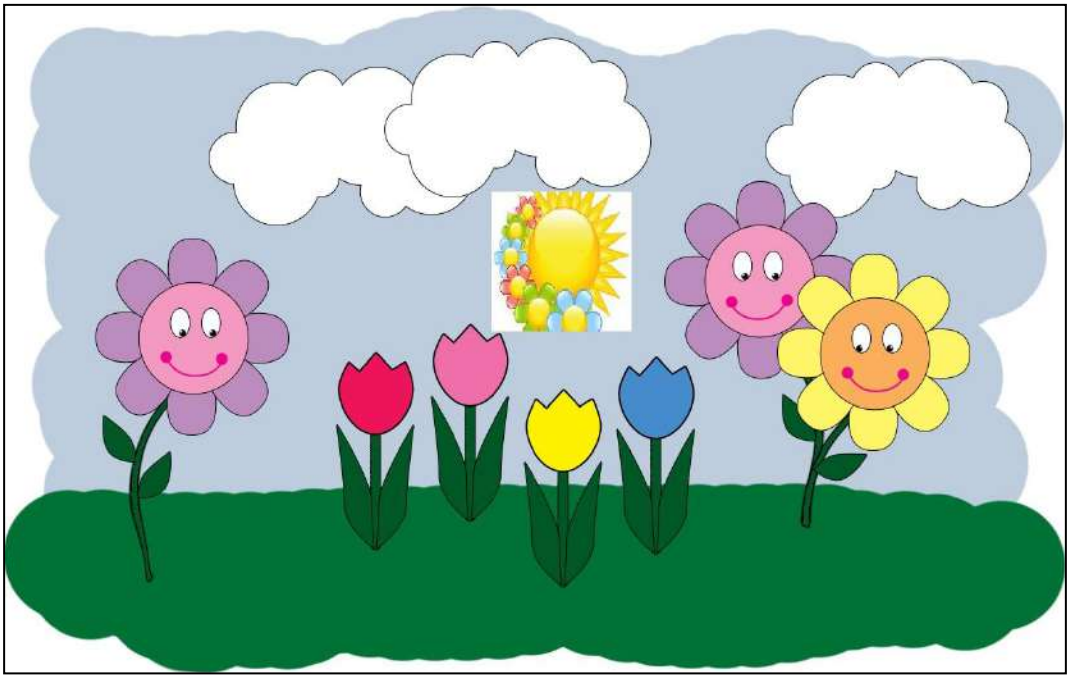

जाड़ ह भागत हे जी ,
गरमी के दिन आगे।
स्वेटर साल ल रखदे,
कुछु ओढे ल नइ लागे।
कुलर पंखा निकाल,
रांय रांय के दिन आगे।
घाम ह अब्बड़ बाढ़गे,
गरम गरम हावा लागे।
आमा अब्बड़ फरे हे,
लइका मन सब मोहागे।
चोरा चोरा के खावत लइका,
ओली म धर के भागे।।

जीवन इसका नाम (सरसी छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

जीवन को तुम जीना सीखो, किस्मत को मत कोस ।
खुद बढकर तुम आगे आओ, और दिलाओ जोश ।।
सुख दुख दोनों रहते जीवन, हिम्मत कभी न हार ।
आगे आओ अपने दम पर, होगी जय जयकार ।।
सिक्के के दो पहलू होते, सुख दुख दोनों साथ ।
कभी गमों के आँसू बहते, कभी खुशी हैं हाथ ।।
राह कठिन पर आगे बढ़ जा, मंजिल मिले जरूर ।
वापस कभी न होना साथी, होकर के मजबूर ।।
अर्जुन जैसे लक्ष्य साध लो , बन जायेगा काम ।
हार न मानो कभी राह में, जीवन इसका नाम ।।
जीवन एक गणित है प्यारे, आड़े तिरछे खेल ।
गुणा भाग से काम निकलता, होता है तब मेल ।।
हँसकर के अब जीना सीखो, छोड़ो रहना मौन ।
माटी का जीवन है प्यारे, यहाँ रहेगा कौन ?

<u>दाई ददा के गोठ</u>

लेखक-बलराम नेताम

दाई दादा के गोठ ल, सुनथो जी

मने मन गुनथो जी,

हमर सियान मन के, सीखनी ए जी

दाई ददा के सुघ्घर, बानी ए जी,

दाई कहिथे पढ़ई लिखई, तोर किसानी ए जी

ददा कहिथें एहि तोर संग, संगवारी मितानी ए जी,

बेटा बने पढ ले, एहि तोर जिनगानी ऐ जी,

दाई ददा के गोठ ला सुनथो जी

मने मन गुन थो जी,

बिन पढ़ई के जिनगी अंधियार हो जाहि जी

बने पढबे त उजियार हो जाहि जी,

ददा कहिथें मोर राज दुलरुवा

दाई कहिथें सोन चिरैय्या के फूल,

छः साल के होंगे बेटा अब जाना है स्कूल।

दाई ददा के गोठ ला सुनथो जी

मने मन गुनथो जी

मने मन गुनथो जी।।

दृश्य अनोखा

लेखक - बलदाऊ राम साहू

बंदर चला रंग-पिचकारी लाने,

भालू लगा है धूम मचाने

हिरणी बना रही थी व्यन्जन

हाथी बैठा, छककर खाने।

गदहा सुर साध रहा था

कोयल लगी गीत सुनाने,

चंदा मामा जल्दी आओ

नन्ही गिलहरी गा रही तराने।

बब्बर शेर लगा कर आसन

रौब जमाता, करता शासन

पीकर मदिरा का वह प्याला

आया वह ठुमका लगाने।

लोमड़ी, चीता, जेब्रा आये

एक दूसरे को गले लगाये

गीदड़ दौड़कर गया गुफा में

जो रूठे थे, उन्हें मनाने।

होली का है दृश्य अनोखा

या फिर है आँखों का धोखा

छोटे-बड़े का भेद नहीं है

सब बैठे हैं फाग सुनाने।

परीक्षा की तैयारी (सार छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

प्रश्न सभी तुम हल कर डालो, अच्छे नंबर पाओ ।
करो परीक्षा की तैयारी , अव्वल नंबर आओ ।।

पढ़कर जाओ प्रश्न सभी को, लिखकर पूरा आओ ।
कर लो अब उपयोग समय का, व्यर्थ नहीं गंवाओ ।।

उठ जाओ जल्दी सोकर के, आलस को अब त्यागो ।
लक्ष्य अगर हासिल करना है, झटपट जल्दी जागो ।।

अर्जुन जैसा लक्ष्य रखो तुम, अचुक निशान लगाओ ।
करो परीक्षा की तैयारी, अव्वल नंबर आओ ।।

घबराना मत प्रश्न देखकर, शांति पूर्वक विचारो।
समाधान चुटकी में होगा, जीवन फिर सँवारों ।।

तांक झांक मत करना बच्चों, अपने आप बनाओ ।
मिल जायेगी मंजिल तुमको, जग में नाम कमाओ ।।

नाम करो सब मातु पिता का, सच्चे पूत कहाओ ।
करो परीक्षा की तैयारी, अव्वल नंबर आओ ।।

देखो मत मुड़कर पीछे अब, आगे बढ़ते जाओ ।
नाम परीक्षा का लेकर के, कभी नहीं घबराओ ।।

कंटक पथ पर आगे बढ़कर, तुम पद चिन्ह बनाओ ।
इस माटी का कण कण पावन, माथे तिलक लगाओ ।।

भूलो मत संस्कार कभी भी, चरणों शीश झुकाओ ।
करो परीक्षा की तैयारी, अव्वल नंबर आओ ।।

परीक्षा

लेखक - गोपाल कौशल

खुशी-खुशी दो तुम परीक्षा
एक उत्सव हैं हर परीक्षा ।
हंसते-हंसते करों पर्चा हल
मत करों तुम कोई चिंता ।।

मित्रों पाई जो हमनें शिक्षा
बस चलें हम उसी दिशा ।
गुरुजनों ने सिखाया पाठ
प्रश्नों का उत्तर मोती सरीखा ।।

प्रतिभा का आईना है परीक्षा
सिखाती जीने का सलीखा ।
तुम भी प्रतिभा दिखला दो
बनों तुम गांधी-कलाम सरीखा ।।

पापा मुझको सैर करा दो

लेखक - अरविन्द वैष्णव

पापा मुझको सैर करा दो

अपना गांव मुझे घुमा दो

बस कहते हो प्यारा गांव

बरगद की वह छाँव बता दो

गिल्ली डंडा क्या होता है

क्या होता है गेड़ी चढ़ना

नंगे पाँव खेत में चलना

पापा मुझको भी सिखला दो

खपरा छानी किसको कहते

कच्चे घर में कैसे रहते

गोबर से छेनो का बनना

पापा हमको भी बतला दो

फरा मुठिया और अंगाकर

मुझको भी खिलाओ न

पापा मुंह मे पानी आये

कोचई जिमि कांदा बनवाओ न

अखबारों में रोज ही छपता

नरवा, गरवा, घुरवा, बारी

पापा ये सब क्या होता है

मुझको भी तो यह दिखला दो

बच्चे की बातें सुन सुन

पापा लगे पलक झपकाने

बैलगाड़ी मे तुझे घुमाउँ

छत्तीसगढ़ के ओ दीवाने

प्रकृति गान

लेखक देवानंद साहू(पावनेय)

नीले नीले आसमान में

पिला सूरज आया है,

खुद जागा है सबसे पहले

फिर वो हमें जगाया है।

पेड़ो की पत्ती को देखो

हरा भरा मन भाया है,

रंग बिरंगे फूल खिले है

क्यारी को महकाया है।

पक्षी गाते सुंदर गाना

सरगम नया बनाया है,

हवा बहाते शुद्ध तरु ये

मौसम बड़ा सुहाया है।

मिट्टी है अनमोल यहाँ की

पानी गंगा माया है,

चंदन सी है धूल यहां की

माथे से इसे लगाया है।

फागुन आवत हे

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

हरियर हे रुख-राई,जस धरती के कोरा
नवा-नवा फूल फुले ,फुलवारी के शोभा
आमा ह मउरे जस, धरती के मउर हे
कोयली ह गावत हे,अमर इया ठउर में
महुआ के मतौना सोन्द,सब ल मतावत हे
घुंघरू कस चना बाजे, सरसो पिवरावत हे
लागत हे मोला, रँगरेली फागुन आवत हे।।

धरती म उड़त हे, रंग अउ गुलाल ह
गुंजत हे चारों मुड़ा, नगाडा के ताल ह
गदरत हे मगन मन,मन मंजूर नाचत हे
लइका सियान सबो, मिलके फ़ाग गावत हे
डोकरा के अगोरा म,डोकरी मन मन मुचकावत हे।
लागत हे मोला रँगरेली.....

भउजी के चिक्कन गाल,हरियर पिवरी दिखत हे
भैया ह माते हे, भांग ल पियत हे
चुरहि ठेठरी खुरमी,बरा चौसेला
लइका मन मगन होगे, पिचकारी के ठेला
चेलिक मोटियारी मन,मने-मन लजावत हे।
लागत हे संगी मोला.....

कान्हा के पिचकारी म, राधा ह रंग जाहि
मया के गुलाल,कान्हा बर सज जाहि
गली-गली डंडा नाचा म,सब झन जुरियाही
होली के राख आसन,मनके मइल जर जाहि
कंगला अउ बड़हर,सबो झन अनचिन्हारी हे
मनखे ले मनखे के, भेद मिटावट हे।
लागत हे संगी....

फागुन गीत

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

गीतों की महफिल सजी हुई है

नदी नाला झरनें गीत गा रहे

फागुन की रुत जी आ गयी है

नभ धरा चाँदनी में नहा रहे

1.हरी-हरी घासों पे ओस के मोती

चलो नंगे पैर बढ़े नैनों की ज्योति

जग सारा स्नेह लगन से भरा रहे

नदी नाला--------

गीतों की महफिल-------

2. टेंसू दहकता रस टपके बौर से

राधा को देखे कान्हा जी गौर से

झूला पे बासुँरी बजा रहे है

नदी नाला -------

गीतों की महफिल-------

3.मन में उमंग है तन में तरंग

रंग सराबोर हुई यमुना औ गंग

राजा रंक मिल होली मना रहे

नदी नाला-------

गीतों की महफिल

4.बजती डफली झांझ मतवाली

साजन उड़ेल रहे रंग भरी थाली

भेष विविध बालक बना रहे

नदी नाला-------

गीतों की महफिल ------

5.गुझिया सुहाली मठरी समोसा

दही बड़ा चटपटा तीखा भकोसा

पकवान थाल सब सजा रहे हैं

नदी नाला-----

गीतों की महफिल-----

6.कर तीनों लोक अपने खिलाते

स्वांग रचकर श्याम सबको रिझाते

लीला नवीन हमें दिखा रहे हैं

7. राग द्वेष मिटाने का संदेश देता

बदले में फागुन कुछ भी न लेता

भक्त पह्लाद पाठ सिखा रहे है

नदी नाला----

गीतों की महफिल---

बसंत ऋतु

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

आगे बसंत ऋतु ह संगी
सबके मन ह डोलत हे
पेड़ में बइठे कोयल ह
कुहु कुहु कहिके बोलत हे

बाग बगीचा हरियर दिखत
सुघ्घर फूल ह फूलत हे
पेड़ म बांधे हावय झूला
लइका मन ह झूलत हे

मउर धरे हे आमा में
महर महर ममहावत हे

फूल फूले हे फूलवारी में
सबके मन ल भावत हे

हवा चलत हे अब्बड़ संगी
डारा मन ह झूमत हे
खेत खार ह हरियर दिखत
लइका मन ह घूमत हे

चना मटर के दिन आये हे
लइका मन ह जावत हे
खेत म नइहे कोनो जी
चोरा चोरा के खावत हे

<u>बालिका शिक्षा</u>

लेखिका - गिरजा ध्रुव

पापा के लाड़ली रानी

मत कर तै कोनो नादानी

अनपढ़ रहिबे त कहिबे

अबला नारी

सास ससुर केतको

सुनबे तै गारी

पढ़ लिख के बन जा

तै झांसी के रानी

स्कूल जा के देख

पुस्तक हावे आनी बानी

धर ले तै कलम

रूपी तलवार

नई सहना हे तोला

कोनो अत्याचार

तोर उम्मीद म टिके हे

दुनिया सारी

तै भारत के

बेटी प्यारी

भगत सिंह

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

इस हिन्द की धरा के थे शान भगत सिंह
माँ भारती के लाल नौजवान भगत सिंह
लालयपुरा के बंगा ने दी बचपन की खुशियां
विद्यावती-किशन के रहे जान भगत सिंह

जलियांवाला बाग की वेदना बसाके मन में
चिंगारी बनी शोला ये संधान भगतसिंह
पंजाब की धरा से बन गर्जना दहाड़े
भारत के हर युवा के अभिमान भगत सिंह

थी आरजू इक मन में हो आजाद मेरी माता
कर दी जवानी अर्पित ले अरमान भगत सिंह
हँसते हुए भी फाँसी पे चढ़कर दिखाया जग को
भारत के लिए हो गए बलिदान भगत सिंह

भाजी-भाजी-भाजी

लेखक चितेश्वर प्रसाद वर्मा

छत्तीसगढ़ के भाजी गभइया

आनी बानी मैं बखावन

तरिया नरवा खेतीखार

घुरवा परिया ले लानव

कइसे विटामिन येमा भरे हे

खाके सब्बो जानौब

पटवा, अमारी, नुनियाभाजी

कोचई जिमिकांदा

बोहार भाजी मुंह चटकारे अम्मट डार के रांधा

खेड़हा सुनसुनिया खोटनीभाजी

छार नन सुघ्घर रांधा

लसून गोदली के फोरन देके

अउ परोसी ल बांटा

मुनगा मखना बरबट्टी भाजी

चरोटा ल दवाई लाना

दारभात के पाचन सुंदर

ये महिमा जानौ

लाली करेला पालक भाजी

चेच पकड़ी रोपा

कुरमा कुकरीपोटा भइया

पीपर खुड़मुड़ी चोखा

भारत मां के सपूत

लेखक - डीजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

(1)

तिलक लगाकर चल, भाल सजाकर चल

माटी मेरे देश की, कफ़न लगाकर चल

देश में वीर योध्दा जन्मे, मच गई खलबल

भारत मां के सपूत है ,आगे चल आगे चल

(2)

भगत, चंद्रशेखर, सुखदेव थे क्रांतिकारी दल

अंग्रेजो के नाक में दम, कर रखा था हरपल

देश आजादी पाने के लिए,बना लिए दलबल

भारत मां के सपूत है,आगे चल आगे चल

(3)

नारी जगत की शान ने, मचाया कोलाहल

ऐसी वीरांगना लक्ष्मीबाई को याद करेंगे हरपल

मातृभूमि के लिए, जब कुर्बानी दी थी ओ पल

भारत मां के सपूत है, आगे चल आगे चल

(4)

लाल बाल पाल क्रांतिकारी, ये थे गरम दल

साइमन कमीशन वापस जाओ, किया हल्ला बोल

वीर लाला लाजपत राय ने गवांई प्राण ओ पल

भारत मां के सपूत है, आगे चल आगे चल

लेख - मस्ती के फुहार - होली के तिहार

(होली विशेष)

महेन्द्र देवांगन "माटी"

होली हे भई होली हे , बुरा न मानों होली हे ।

होली के नाम सुनते साठ मन में एक उमंग अउ खुशी छा जाथे। काबर होली के तिहार ह घर में बइठ के मनाय के नोहे। ए तिहार ह पारा मोहल्ला अउ गांव भरके मिलके मनाय के तिहार हरे।

कब मनाथे ------ होली के तिहार ल फागुन महीना के पुन्नी के दिन मनाय जाथे।

एकर पहिली बसंत पंचमी के दिन से होली के लकड़ी सकेले के शुरु कर देथे। लइका मन ह सुक्खा लकड़ी ल धीरे धीरे करके सकेलत रहिथे।

लकड़ी छेना चोराय के परंपरा------- पहिली जमाना में लकड़ी छेना के दुकाल नइ रिहिसे त चोरा के होली में डारे के परंपरा रिहिसे।
हमन नान नान राहन त गांव में दूसर के घर या बियारा कोठार से चुपचाप छेना या लकड़ी ल चोरा के लानन अउ होली में डार देवन । होली में डारे लकड़ी ल कोनों नइ निकाल सके। काबर ओहा होलिका ल समरपित हो जथे।

अब मंहगाई के जमाना में ए सब परंपरा ह नंदागे। अब तो होलीच के दिन लकड़ी , छेना ल लानथे अउ होली जलाथे।

फाग गीत के परंपरा ---------- होली के पंदरा दिन पहिली गांव के चौराहा मन में सब कोई सकलाके नंगाड़ा बजाथे अऊ फाग गीत गाथे। कई जगा फाग गीत अउ राहेस नाचे के प्रतियोगिता भी होथे।

होली कइसे जलाथे --------- होली ल कोनों भी आदमी नइ जला देवे। एला महराज मन ह पूजा पाठ करके शुभ मुहुरुत देखके रात में जलाय जाथे। पहिली एकर बिधि बिधान से पूजा करे जाथे ओकर बाद चकमक पथरा से पोनी या पैरा में जलाके होली ल जलाय जाथे। ओकर बाद सब एक दूसर से गला मिलके बधाई अउ शुभकामनाा देथे।

हुड़दंग करे के गलत परंपरा ---------- होली एक पवित्र तिहार हरे। एहा बुराई से अच्छाई के जीत के तिहार हरे। फेर कतको सरारती लइका मन ह एला गलत ढंग से मनाथे। होली में हुड़दंग करके एकर रुप ल बिगाड़ देहे। कतको झन ह नसा पानी करके बहुत हुड़दंग करथे अऊ अंडबंड गारी बकत रहिथे। काकरो उपर केरवस, चीखला, गाड़ा के चीट अऊ गोबर ल घलो चुपर देथे। कोनों के मुड़ में अंडा ल फोर

देथे त कोनों उपर केमिकल वाला रंग लगा देथे।
एकर से कतको झन ह लड़ई झगरा घलो हो जाथे।
वइसे धीरे धीरे ए परंपरा ह कम होवत जावत हे फिर भी सुधारे के बहुत जरुरत हे।

होली ल परेम से एक दूसर के उपर रंग गुलाल लगाके अऊ गला मिलके मनाना चाहिए।

आशीर्वाद ले के परंपरा ---------- होली जलथे ताहन सब आदमी अपन अपन घर से पांच ठन छेना ,एक मूठा चांउर अऊ नरियर धरके होली जगा जाथे अऊ पूजा पाठ करके होलिका में समरपित करके आसीरबाद लेथे।

होली के राख ल एक दूसर के माथ में लगाथे अउ शुभकामना देथे। कतको झन ह राख ल लान के अपन घर में छितथे ताकि बुरी नजर से बचे रहे।

होली के काहनी --------- एक झन हिरण्यकश्यप नाम के बहुतेच दुष्ट अउ पापी राजा रिहिसे। वोहा भगवान ल न तो मानत रिहिसे न दूसर ल माानन देत रिहिसे। ओकर राज में कोनों भगवान के नाम नइ ले सकत रिहिसे। सबले बड़े मेंहा हरों काहे।
ओकर एक झन बेटा प्रहलाद ह भगवान के बहुत भक्त रिहिसे। ओहा हर समय भगवान के नाम लेवत रहय । राजा ह कइ प्रकार से ओला समझाइस, फेर प्रहलाद ह मानबे नइ करीस। राजा ह वोला पहाड़ से फेंकवा दीस, हाथी से दबवा दीस अऊ कई प्रकार के उपाय करीस तभो ले प्रहलाद ह मरबे नइ करीस । अंत में राजा ह अपन बहिनी होलिका से आगी में जलाय ल कहिथे। होलिका ल वरदान मिले रहिथे के वोहा आगी में कभू नइ जले। तब होलिका ह प्रहलाद ल गोदी में धरके आगी में

बइठ गे । अपन शक्ति के गलत उपयोग करे के कारन होलिका आगी में जलगे अउ प्रहलाद ह बांच के निकल गे।

ओकरे याद में ए तिहार ल मनाय जाथे।

माँ

लेखक - देवानंद साहू

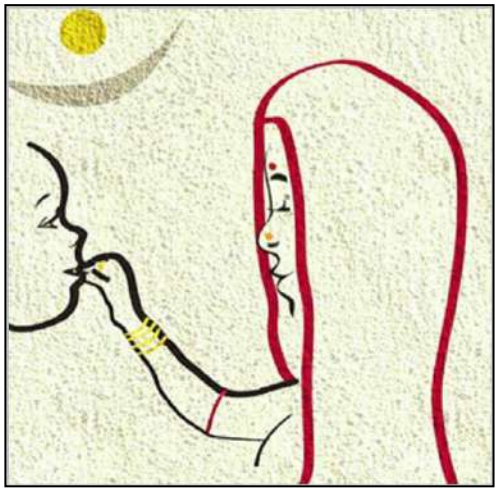

माँ पुण्य तीर्थ जस पावन हे

माँ जिनगी में मनभावन हे

माँ अड़हा के समझवन हे

प्यासे धरती के सावन हे

माँ जिनगी के हरयाली हे

नई ते उजड़े जंगल खाली हे

माँ जिनगी के वनमाली हे

धाने के सोनहा बाली हे

माँ हमर देवता खोली हे

माथा के चंदन रोली हे

माँ मीठा गुरतुर बोली हे

जिनगी के हंसी ठिठोली हे

माँ सुग्घर अकथ कहानी हे

सुक्खा धरती बर पानी हे

माँ हे ते भागमानी हे

नइ कोनो एकर सानी हे

माँ मावस के अंजोरी हे

घर के धनहा तिजोरी हे

माँ सब लइका के लोरी हे

माँ पंछी सुघर चकोरी हे

माँ हिन्दू के पुराण हे

माँ मुस्लिम के कुरान हे

माँ गंगा के स्नान हे

माँ जम्मो स्तुतिगान हे

<u>मेरा नाम दीपक है</u>

लेखक - दीपक साहू कक्षा सातवीं

मेरा नाम दीपक है

शिक्षा का दीप जलाता हूं

जो बच्चा स्कूल नहीं आता

उसके घर शिक्षादूत बनकर जाता हूं

समाझाता हूं उसे और उसे माता पिता को

स्कूल का महत्व समझाता हूं

बात समझकर मेरी वो

भेज देते मेरे साथ

देकर मेरे हाथें में हाथ

उसको शला लेकर आता हूं

शाला लाकर उसको

मैं भी खुश हो जाता हूं

मेरी मां

लेखिका - पुष्पा नायक

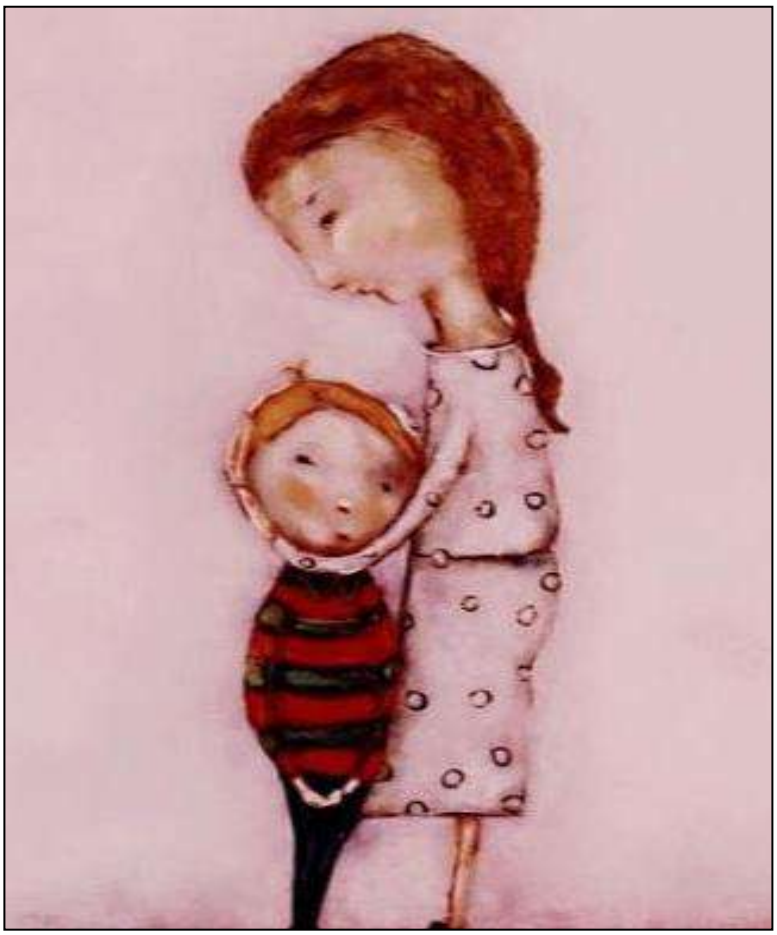

ईश्वर की अपार शक्ति

मेरी सांसों की शुरुआत

मेरे हृदय कर आवाज़

जीवन के सारे दर्द की दवा है जो,

वो है मेरी मां.

नौ माह कोख में भार सहे जो,

अपनी पीड़ा भूल सबका ख्याल रखे

अपनो के लिये अपना सब कुछ कुर्बान करे जो

वो है मेरी मां

हर कदम पर प्रेरणा की स्रोत बनी जो

मायूस हो जब वापस आऊं

तो और बेहतर होने की आस जगाए

खुद भूखी रहकर सबको तृप्ति दिलाये

जिन्दगी के हर पग पर मेरी ढ़ाल बने जो

वो है मेरी मां

मेरे आत्मविश्वास को प्रबल बनाए

बेसहारा हुए तो सबल बनाए

मेरे अस्तित्व की शुरुआत है

और अंत तक जिसका आशीर्वाद है

वो है मेरी मां

रँगीली होली

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

होली लाये प्रेम का,सन्देशा जन मन भरे
हर्षित मन झूमें, लगे मधुमास हो
धरती के सारे रंग,भाव बन सजे ऐसे
जैसे इस बार होली,अपनी ही खास हो..

लाल लगे माथे,शौर्य का प्रतीक बन
पौरुष पराक्रम ,विजय श्री भाल हो
केसरिया त्याग का सन्देशा,जग जन को दे
संयम वैराग्य तप,अपने ये ढाल हो
धरती की अंगड़ाई,हरे की हरियाली फैले
लहराये तृण-तृण,वसुधा का साज हो...

विद्या का प्रकाश फैल,तिमिर अशिक्षा का हरे
चहुँओर ज्ञान पीले, रंग का पैगाम हो
नीले सज पुरुषार्थ,मान बढ़ जाये
विश्व गुरु फिर अपना, हिंदुस्तान हो.....

श्वेत सजे मन की ,पवित्रता का भाव लेके
चहुँओर शांति,स्वच्छता सद्भाव हो
रंग सारे मिल जाये,दूर हो विषमताएं
विश्वशांति,सद्भाव का,पूरा अब अरमान हो.....

<u>मोर सुग्घर गॉव</u>

लेखक - नेमीचंद साहू

लिम पीपर के छइंहा जेमा

सियनहा मन के चौपाल हे !

सुग्घर नित नियाव करइया

चैतू मंगलू अउ गोपाल हे !!

सोनहा मोर धान के बाली

भररी अउ कछार हे !

बिरबिट करिया कन्हारमाटी

जेकर महिमा अपार हे !!

मोटहा चउंर के बासी ह ,

अउ कड.ही गुरतुर मिठाथे!

कॉदा अमारीभाजी दार म

खेडहा अम्मट म सुहाथे !!

डोकरी दाई के लोरी सुग्घर

डोकरा बबा के सियानी हे !

माई--पिला सबो नाचे झूमे

अइसन गॉव के कहानी हे !!

पनिहारिन के कनिहा मटके

रेंगय बॉहें ल जोरे--जोरे !

मोटियारी मन बारी म

लुगरा म भाजी ल टोरे !!

ठेठरी सुहारी खुरमी मुठिया

किसम किसम ले पकवानहे!

होरी देवारी तीजा अउ पोरा

आदर अउ सनमान हे !!

सुवारथ के नइहे पुछइया

अउ नइहे कोनो मीठलबरा!

सुमत के रद्दा म रेंगय

नइ राहय खंचवा-डबरा !!

दाइ-ददा के सेवा करइया

अइसन हमर मितान हे !

धरती दाई के कोरा म

बइठे सिधवा किसान हे !!

गॉव गली के चिखला माटी

जिहॉ किसन अउ राम हे !

घर-घर होवत रमायन गीता

कोरी--कोरी परनाम हे !!

कोलकी कोलकी म बिराजे

अउ रूख राई के डार म !

आशीष देवइया देबी देवता

बइठे शीतला तरिया पार म!!

<u>लाटा</u>

लेखक ' संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

चलव लाटा बनाबोन, चलव चांट के खाबोन।

हो बाबु होय चाहे नोनी, हो सचिन होय चाहे धोनी।।

१

अमली फर ल टोर के सुघ्घर,सील लोडहा म दताबोन।

नून मिरचा अऊ धनिया संग म, कस के ओला ठठाबोन।।

बांस काडी म चटकाके, टुहूं सब ला देखाबोन।।

२

पेरा फुटू खोज के सुघ्घर , पनपुरवा चमकाबोन।

नून मिरचा अऊ धनिया संग म,केरा पान लोटाबोन ।

अंगरा भीतरी चुरो के ओला, जरत ले घलो डबकाबोन ।।

३

उलहवा उलहवा आमा घलो ल, पिसी चटनी बनाबोन ।

बासी संग म चीख चीख के, दुई दिन ले ओला खाबोन।।

डोकरी दाई डोकरा बबा ल, थोरेच किन दे आबोन।।

४

बोइर कुट के मुठिया बनाके, मन बरहा चमकाबोन।

गुठलू कुचर के चिरौंजी ल सुघ्घर, तेल म फोर के खबोन।

चिरपोटी के अम्मट रस ल, चुचर चुचर के खाबोन।।

चलव लाटा बनाबोन, चलव चांट के खाबोन।

हो बाबु होय चाहे नोनी, हो सचिन होय चाहे धोनी।।

<u>सुघ्घर गोठ</u>

लेखक - नेमीचंद साहू गुल्लूं

आवव सबो मिल जुरके

सुघ्घर बगिया ल सजाबो

नवा-नवा पेड़ लगाके

हरियाली ल बगराबो ||

कोना-कोना के सफई

गंदगी ल दुरिहा भगाबोन

गली-गली म परचार कर

सबोझन ल बताबोन ||

नइ राखन मन म भरम

ऑगनबाडी़ म जाबोन

पोसन अहार दलिया ल

लइका ल दूध पियाबोन||

जिनगी के सुघ्घर अधार ए

नान्हे--नान्हे लइकामन

इसकुल म दाखिला कराके

गढ़बो जिनगी ल हमन ||

किसानी के करबोन बुता

नवा तकनीक अपनाबो

डोकरी डोकरा के सेवा कर

दुलरवा लइका कहाबो ||

सुरूज-चंदा कस बरबो

नाव ल उज्जर कराबोन

करम हमर पूजा हरय

जग म एला बताबोन ||

मइनखे अन मइनखे के

धरम के झंडा फहिराबो

चिरइ-चिरगुन ल घलो

दया के ओनहा पहिराबो||

बरोबर के भाव लऱखबो

सबो ल गले लगाबोन |

अइसन गॉव-सहर बनाके

छत्तीसगढिया कहाबोन||

अरजी-विनतीहे सबो ले

ए बात म विचार करव

सुमत के रद्दा म चलके

अउ मन म एला धरव||

हम वीर सिपाही भारत के

लेखिका - अणिमा उपाध्याय

नहीं है खौफ इस समन्दर से
मुझे है प्यार जमीं से खंजर से
हवा का रुख भी बदल मैं सकता हूं
दिल में छुपा के तिरंगा रखता हूँ
मैं हूं सैनिक मां का अदना सा
उसके कदमों में मस्तक झुका के रखता हूँ।
नहीं है प्यार मुझे युद्घ या तबाही से
प्यारी है जिंदगी जो खुदा से हमने पाई है
लेकिन जीवन का मोह मै छोड़ देता हूं
वतन पे मिटने का प्रण जब मैं लेता हूं
देश की आवाम चैन से सोएगी
वीरों में गिनती तभी तो होएगी
हमें हर वक़्त सतर्क रहना होगा
जागना है, हमें ना सोना होगा

प्यार करते हैं उन्हें जो दिल लगाते हैं
भून देते हैं उन्हें जो दहशत फैलाते हैं
नहीं दुशमन को कभी चैन से सोने देंगे
बिठा के घुटनों पे उन्हे मजबूर कर देंगे
उन्हें गर प्यार की भाषा समझ ना आती है
हमें भी युध्द भेरी बजानी आती है
हम हैं हिन्दोस्ताँ के वीर सिपाही सब
दुश्मनों की ईंट से ईंट बजानी आती है
पल भी हिचकेंगे ना, ये जां निसार कर देंगे
तेरी गोदी में सर अपना रख देंगे
चले जायेंगे जीभर सोने को
तेरी गोदी में नींद गहरी आती है.....

होली

-1-

लेखक - बलदाऊ राम साहू

आओ मिलकर बात करें हम होली में।

रंगों की बरसात करें हम होली में।

धोएँ मन का मैल, हास - परिहास करें,

बिन मतलब दूसरों का न उपहास करें।

ज़ज्बातों का मान करें हम होली में।

आओ मिलकर बात करें हम होली में।

जुम्मन अलगू गले मिलें औ' प्यार करें,

आपस में ना झगड़े , ना तक़रार करें।

सद्भाव की लिखें इबादत हम होली में,

आओ मिलकर बात करें हम होली में।

अलग -अलग हों फूल, गंध अलग हों,

चाहे सब गीत, लय और छंद अलग हो।

भावों का बस, मिलाप करें हम होली में,

आओ मिलकर बात करें हम होली में।

होली

-2-

लेखक - बलदाऊ राम साहू

खेलो - कूदो, नाचो - गाओ होरी मा।

मस्ती के सब रंग लगाओ होरी मा।

जिनगी मा कतको दुख-पीरा आथे जी

उन सब ला झट तुम बिसराओ होरी मा।

कब तक धरे रहिहु तुम जुन्ना बात इहाँ,

नवा - नवा बिचार जगाओ होरी मा।

जात-धरम के झगरा-झंझट ला छोड़व,

बने पियार ले गला लगाओ होरी मा।

दुखिया मन के मन मा उछाह छा जाही

ऊँकरो दुख ला होरी बारौ होरी मा।

होली

-3-

लेखक - गिरधर राम साहू

टीवी, मोबाइल छोड़ के पढाई, लिखाई में रंग जाना है

नये-नये सोपान गढ़े बर, ग्यान दीप जलाना है

चलत-चलागन पुरखा मन के, रास फाग रचाना है

होली छेके के चक्कर में, प्राण नहीं गवाना है

काम,क्रोध, मद,मोह के संग, बैर भाव भी मिटाना है

प्रेम सद्भाव के मीठास, आपस में बढाना है

नये-नये सोपान गढ़े बर, ग्यान दीप जलाना है

पेड़-पौधा बचाना है, पानी भी कम बहाना है

प्राकृतिक रंग-गुलाल लगाना है

जात-पात, छोटे-बड़े, ऊँच-नीच, के भाव भूल जाना है

फूहड़ता से सबको बचाना है, अच्छा संस्कृति-संस्कार अपनाना है

खुशियो की सौगात दे जाना है

नये-नये सोपान गढ़े बर, ग्यान दीप जलाना है

गंदगी की होली जलाना है, स्वच्छता की अलख जगाना है

देश के खातिर अभिनंदन, जैसे शौर्य दिखाना है

पुलवामा के अमर शहीदो का, मान हमें बढाना है

मतदाताओ को जागरूक कर, अच्छा सरकार बनाना है

देश के झण्डा ऊँचा करे बर, अपन फर्ज निभाना है

रंग, गुलाल, पिचकारी के संग, होली अच्छा मनाना है

नये-नये सोपान गढ़े बर, ग्यान दीप जलाना है

होली

-4-

लेखक - अरविन्द वैष्णव

बसंत बहार की अदाएं,

धूमिल हो रही गाथायें

होली का त्यौहार पर

मिलकर मनाओ जी ।

जात पात सब भूलकर

भेदभाव सब छोड़कर

सबसे गले मिलकर

भाईचारा बढ़ाओ जी ।

दिल मे उत्साह भर

रंगों से सरोबार हो

अपनेपन के भाव से

खुद को भी रंगाओ जी।

बुराई का संग छोड़

पलाश का फूल तोड़

फागुन के गीत गा

नशे से खुद को बचाओ जी ।

पर्यावरण (गीत) पहेलियाँ

श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

फल के अन्दर बिस्तर अपना

छिपे -छिपे हम सोए रहते

मिट्टी में मिलकर हम उग आते

बताओ हम क्या हैं?

उत्तर:--बीज।

पौधों को मैं जकड़े रहती,

मिट्टी के अन्दर घर मेरा

लवण और जल पहुंचाती,

बताओ क्या नाम मेरा?

उत्तर:--जड़।

पत्ती फूलों का ले छाता,

पेड़ों की ताकत कहलाता

ऊपर - ऊपर बढ़ता जाता

कभी न सोता, सदा जागता

उत्तर:--तना।

हरी-हरी पोशाक हमारी

हरा- भरा है, सबका रूप

पौधों को भोजन हम देते

जब भी मिलती हमको धूप

उत्तर:--पत्ती

रंग -बिरंगा रूप हमारा

तितली को लगता है प्यारा

भौंरे हम पर गुंजन करते

खुशबू फैलाना काम हमारा

उत्तर:--फूल

खट्टा - मीठा स्वाद हमारा

रोग नहीं हम होने देते

पोषक तत्व हमारे अन्दर

बताओ हमको क्या कहते

उत्तर:--फल

<u>पहेलियां</u>

प्रस्तुतकर्ता - विद्यार्थी , प्राथमिक शाला बर्रापारा, डौंडीलोहारा

1. तीन रंग तथा चौड़ी छाती, फर-फर फर-फर भरे उड़ान।
   जय-जयकार कर, मेरा करते सब सम्मान।

2. चले सुंदर,घूमे फिरे, तुम बिन चला जाए।
   और जो तुम बिन चले, वो दिन दिए गँवाए।

3. हरा ताज वह पहने आई, फिरती फूली-फूली।
   गोरा रंग है उसका, बताओ नाम बड़ी मामूली।

4. सबसे बड़ा मरुस्थल जग का, आखिर में फिर भी हार।
   बीच कटा तो सरा हो गया, नाम बताओ जरा।

5. दुध का पोता, दही का बच्चा।
   सब पीते हैं उसे कच्चा।

उत्तर-तिरंगा झंडा, घड़ी, मूली, सहारा, लस्सी

बूझो तो जाने

प्रस्तुतकर्ता - चन्द्रहास सेन

1. बिना पैर के दौड़ लगाऊं, टेढ़ी मेढ़ी चाल
   पानी सेमैं प्यास बुझाऊं,भागूं देख के जाल

2. नाना ने नानी से,बुझी एक पहेली
   सुबह आती शाम को जाती, दुल्हन नई नवेली

3. पवन सवारी लेकर उड़ुं, धरती से आकाश
   जीवों को जीवन देने लाऊं मैं प्रकाश

4. अड़ी हूं पर पड़ी हूं, दूर तक चली हूं
   मंजिल तक तुम्हें पहुंचाने, धरा पर बनी हूं

5. एक फूलवारी ऐसी, जिसमें पत्ता न डाली
   दिन में छिपे, रात में निकले, करे न कोई रखवाली

6. न कोई छोटी न कोई बड़ी, सात सहेलियों की टोली
   मिलकर रहते सारे, जैसे दामन और चोली

7. मैं सवार जल पर, मुझपे कई लोग सवार
   चलने से पहले मांगू, तुमसे कोई पतवार

8. इसने दिया उसने लिया,चलती रही हर बार
   मेरे बिना सुना लागे पूरा ये संसार

9. पहरेदार तुम्हारे घर का, दिन सोऊं न रात
   अंदर बाहर जाते लोग, रखते मुझ पे हाथ

10. अड़ा हूं पड़ा हूं बरसों से खड़ा हूं
    आंधी और तूफानों से कई बार लड़ा हूं

11. बादल बरसे बिजली चमके, या बरसे अंगारा
    मातृभूमि की रक्षा खातिर, बीते जीवन हमारा

<u>उत्तर</u>

1 – मछली, 2 – सूरज, 3 – वाष्प, 4- सड़क, 5 – चांदनी, 6 – सप्ताह के दिन, 7 - नाव,

8 - रुपया, 9 - दरवाजा, 10 – पर्वत, 11 - फौजी

अनामिका पांडे का बनाया बस्तर की नारी का सुंदर चित्र

आओ हंस लें

बंटी: आपने नर्स बहुत अच्छी रखी है, उसके हाथ लगाते ही मैं ठीक हो गया.

डॉक्टर: हां मालूम है, थप्पड़ की आवाज बाहर तक आई थी.

होली खेलकर पप्पू घर आया.

ममी: पहले आधार कार्ड दिखाओ तभी एंट्री मिलेगी.

पप्पू: क्यों?

ममी: पिछली बार भी तुम्हारे चक्कर में किसी और को नहला दिया था.

रमेश: इतना परेशान क्यों है?

सुरेश: एक बात ने परेशान कर रखा है.

रमेश: किस बात ने?

सुरेश: यार समझ नहीं आता कि मैंने फोन अपने लिए खरीदा है या फिर चार्जर के लिए?

श्याम एक काला और एक सफेद जूता पहनकर स्कूल आया.

टीचर ने कहा, घर जाओ और जूते बदल कर आओ.

श्याम कोई फायदा नहीं, वहां भी एक काला और एक सफेद जूता ही रखा है.

अनुकरणीय नवाचार

शाला व कक्षा मे वाल पेंट

हेम सिंह राज- शासकीय प्राथमिक विद्यालय खटोला, अकलतरा

हमारा विद्यालय पुराना भवन होने के कारण आकर्षक नहीं दिख रहा था, किंतु शाला के बच्चों व टीचर के द्वारा स्वयं के खर्चों से शाला में विषय से संबंधित पूरे क्लास व बाहरी दीवारों में वॉल पेंट किए है जो बहुत ही अकर्षक व शिक्षाप्रद है. वाल पेंट विषय से संबंधित होने के कारण बच्चे विषय को आसानी से समझ पा रहे हैं. वॉल पेंट के कारण समुदाय की सहभागिता बढ़ी है, माताओ की उनमुखीकरण के अंतर्गत 90 वर्ष की एक दादी मां ने कुर्सी दौड़ खेल में भाग लिया और प्रथम आयी, दादी मां की सहभागिता हम सब के लिए अनुकरणीय है

सहायक सामग्री से अंग्रेजी शिक्षण

प्रस्तुतकर्ता कन्हैया साहू (कान्हा)

गत्ते से बने कॉफी कप के पिछले हिस्से में मार्कर पेन से लिखकर या कंप्यूटर से अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े व छोटे लेटर्स का प्रिंट लेकर सहायक सामग्री का निर्माण किया गया. इसकी सहायता से प्राथमिक कक्षा 1 से 5 तक के बच्चो को खेल खेल में बिग, स्माल, शब्द निर्माण, शब्दो की स्पेलिंग सही करना, खाली स्थान भरना, शब्द पहेली बनाना, छोटे सेन्टेंस निर्माण, और अन्य अंग्रेजी विषय से सम्बंधित गतिविधियों व्दारा अंगेजी विषय सिखाया जा रहा है. बच्चे बहुत ही रुचि लेकर सीख भी रहे हैं.

शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाना

लुकेश्वर सिंह ध्रुव

कविता पर बच्चों द्वारा अभिनय बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता में वृध्दि होती है. गतिविधि से बच्चे जल्दी सीखते है. गतिविधि से बच्चे पढ़ाई में ज्यादा रुचि लेते है. बच्चे पढ़ाई में ज्यादा मन लगाते है एवं गतिविधि में बढ़चढ़ हिस्सा लेते हैं. इस गतिविधि में कक्षा का माहौल बालकेंद्रित हो जाता है.

वर्ग पहेली

प्रस्तुतकर्ता - दीपक कंवर

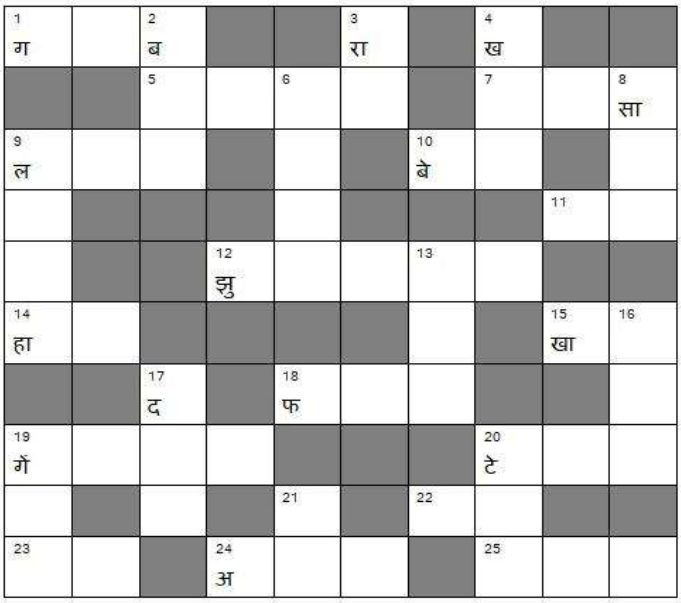

दाएं से बाएं:- 1 गर्व, 5 अचानक, 7 पलास का पेड़, 9 झूठ, 10 समय, 11 दाल, 12 बड़े सवेरे, 14 गुठली, 15 नीचे, 18 दरवाजा, 19 केचुआ, 20 टेढ़ा, 22 बाजार, 23 आग, 24 आलसी, 25 किसका

ऊपर से नीचे:- 2 झाड़ू, 3 रुको, 4 खपरैल, 6 बड़ा चम्मच, 8 सब्बल, 9 लालची, 13 बच्चा, 16 लंगड़ा, 17 शराबी, 19 पशु बांधने का रस्सी, 20 गिरगिट, 21 झोपड़ी

उत्तर

1 ग	र	2 ब			3 रा		4 ख		
		5 ह	ब	6 क	हा		7 प	र	8 सा
9 ल	बा	री		र		10 बे	रा		ब
ल				छु				11 दा	र
चा			12 झु	ल	झु	13 ल	हा		
14 हा	ढू					इ		15 खा	16 ले
		17 द		18 फ	इ	का			ड़
19 गें	ग	रू	आ				20 टे	ड	गा
र		हा		21 झा		22 हा	ट		
23 आ	गी		24 अ	ला	ल		25 का	क	र